तृतीय अध्याय

शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय

तृतीय अध्याय

शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी समस्याओं तथा नारी के विभिन्न रुपों को सुचारु रुप से समझ लेने के लिए पहले शिवानी के कहानी साहित्य को समझ लेना या उसकी जानकारी होना मेरे मतानुसार आवश्यक है। अत: इस तृतीय अध्याय में कहानी का संक्षिप्त परिचय देने का मैंने प्रयत्न किया है।

शिवानी की कुछेक कहानी संग्रहों की कहानियों को परिचय में ` लघु उपन्यास` कहा गया है उदा.कैंजा, विषकन्या,रतिविलाप, माणिक, रथ्या ,गैंडा तथा किशनुली। आजकल कहानी और उपन्यास के बीच की विधा लघु उपन्यास अस्तित्व में आई है। शिवानी के लघु उपन्यासों को परिचय में कहा गया है। दर असल ये लघु उपन्यास दीर्घ या लंबी कहानियाँ ही हैं। अत: उन्हें भी मैंने कहानियों में समाविष्ट कर लिया है।

शिवानी की इ.स.१९८९ में प्रकाशित ` चिर स्वयंवरा` तथा ` करिए छिमा ` कहानी संग्रहों की अधिकांश कहानियाँ १९६५ में प्रकाशित ` लाल हवेली` कहानी संग्रह में हैं। अधिकतर उनकी कहानियाँ एक लघु उपन्यास या` दीर्घ कहानी` के साथ कुछ अन्य कहानियाँ इस रुप में प्रकाशित हुई हैं। इन कहानियों को कहानी संग्रह के रुप में प्रकाशित नहीं किया है बल्कि उस

लघु उपन्यास या लंबी कहानी के नाम से प्रकाशित किया गया है। कभी-कभी शिवानी के उपन्यासों की सूचि में `कृष्णवेणी` `रति विलाप`, `विषकन्या`, `पूतोंवाली`, `कैंजा`, `माणिक`, `गैंडा`, `स्वयंसिध्दा`, `अपराधिनी` इन लघु उपन्यासों तथा संस्मरणात्मक कहानियों के नाम भी पाये जाते हैं। शिवानी की कहानियाँ जिस क्रम से प्रकाशित हुई हैं उनके प्रकाशन वर्ष के अनुसार मैंने कहानियों को लिया है। `मेरी प्रिय कहानियाँ`, `पुष्पहार`, `चिर स्वयंवरा`, `करिए छिमा` इन कहानी संग्रहों की कुछ कहानियाँ पहले ही प्रकाशित हुई हैं। अत: जिस कहानी का परिचय पहले हो चुका है, उस कहानी का दूसरे कथा-संग्रह में केवल नामोल्लेख किया है।

शिवानी की `लाल हवेली` `मेरी प्रिय कहानियाँ` कहानी संग्रह की कहानियों को अन्य कहानी संग्रहों में पाया जाती हैं पूतोंवाली कहानी की `पूतोंवाली` नामक कहानी मुझे अप्राप्य रही तथा `उपहार` और `वातायनी` कहानी संग्रह भी अप्राप्य रहे। शिवानी का अधुनातन कहानी `चांचरी` धर्मयुग इ.स.१९९० के अक्तुबर के अंक में प्रकाशित हुई है, उसका भी समावेश मैंने अपने अनुसंधानयोग्य कहानियों में कर लिया है।

कैंजा (११), विषकन्या (६), रतिविलाप (४), माणिक (८), रथ्या (६), गैंडा (५), किशनुली (५), कृष्णवेणी (७), चिर स्वयंवरा (१५), करिए छिमा (६), अपराधिनी (५), पूतोंवाली (३) स्वयंसिध्दा इन तेरह पुस्तकों से (८४) कहानियाँ प्राप्त हुई। उनका परिचय मैंने प्रस्तुत अध्यय के अंतर्गत कराया है। इनमें `अपराधिनी` तथा `चिर स्वयंवरा` कहानी-संग्रह की सत्य कथात्मक संस्मरणों का भी समावेश किया है। अन्त में हाथ आयी शिवानी की नवीन कहानी `चांचरी` को मिला कर कुल ८५ कहानियों का संक्षिप्त परिचय इस अध्याय में प्रस्तुत कर रही हूँ। शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ `करिए छिमा` और `गहरी नींद` का परिचय मैंने विस्तार के साथ दिया है।

कहानी संग्रह --

(१) कैंजा --

कुल कहानियाँ - ११

(१) केंजा (२) ज्यूडिथ से जयन्ती (३) तुलादान (४) भिक्षुणी (५) मामाजी (६) अनाथ (७) फूल (८) सती (९) मौसी (१०) मसीहा और (११) बन्द घडी।

(१) कैंजा --

इस लघु उपन्यास में नायिका नन्दी तिवारी और नायक सुरेश भट्ट एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट है। नन्दी के ज्योतिषी पिता नन्दी की कुण्डली में घोर वैधव्य का योग होने के कारण डाक्टरी शिक्षा दिलवा कर स्वावलंबी बनाते है। सुरेश नन्दी को न पाकर मानसिक संतुलन खोकर ` सैक्स मैनियाक ` बन कर जघन्य अपराधों में प्रवृत्त होता है। कालांतर में सुरेश द्वारा बलात्कारिता पगली के पुत्र रोहित को नन्दी स्वीकार कर लेती है। अन्त में अपनी अतृप्त आकांक्षाओं तथा मानसिक अभावों की पूर्ति के लिए मरणासन्न सुरेश विवाह कर ` कैंजा ` अर्थात ` विमाता ` का भार वहन करती है।

(२) ज्यूडिथ से जयन्ती --

इस कहानी की नायिका ` रमा ` दी ` आदर्श त्यागमयी भारतीय नारी के रूप में दिखाई देती है।

पिता, पति और पुत्र तीनों घरों में भी उसे कष्ट ही सहने पडते है। छोटी उम्र में रमा दी को पिता की गृहस्थी का बोझ ढोना पडता है। विवाह भी एक दहेजू के साथ होता है, पति घर में भी रमा दी को सुख नहीं मिलता। बल्कि एक पुत्र उसकी आँचल में डाल कर वह परलोक सिधार जाता है। विधवा रमा दी पुत्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाती है। इंजिनियर बना पुत्र विदेश से ज्यूडिथ नामक बहू ब्याह लाता है। ज्यूडिथ से जयन्ती बनी बहू भी सास को अपमानित करती है। रमा दी का जीवन शुरु से अन्त तक दु:खमय दिखाई देता है।

(३) तुलादान --

अल्मोडा के ईसाई परिवार की अनाथ, सोलह वर्षीय, नितांत सुन्दर ` रोजी ` के असफल प्रेम की कहानी है। अबोध रोजी ३५ वर्षीय आई.सी.एस. अफसर से जो विवाहित है, सच्चा प्रेम करती है। इसके कारण वह समाज की दृष्टि में पतिता बनती है, इसकी उसे परवाह नहीं। उस अफसर की पत्नी दोनों को एक साथ देख कर अपने पति को अपनी तरफ खींच कर रोजी को चट्टान से नीचे धकेल देती है।

इस अपघात से रोजी अपाहिज बन जाती है। वह अपने प्रेमी को भूला नहीं पाती। वह अफसर राजनीति में प्रवेश करके एक बडा नेता बन गया है। उसकी साठवीं सालगिरह पर जनता स्वर्णतुला करती है।

तब यह दृश्य देख कर लेखिका के मन में आता है कि पच्चीस वर्ष पूर्व उसी समाज की दृष्टि से पतिता होकर जिसने अपना सर्वस्व जीवनतुला में रख कर तौल दिया था, क्या उस तुलादान की स्मृति उसे विभोर करती होगी ? लेखिका के मन में भले ही यह शंका हो, पाठक जान जाता है कि रोजी का ` तुला दान ` व्यर्थ है।

(४) भिक्षुणी --

` किकी ` अत्यंत आकर्षक व्यक्तित्व की होने के कारण अपनी डॉक्टर ननद की ईर्ष्या का कारण बनती है। उसकी सास भी ननद का ही पक्ष लेती है। किकी इससे नाराज (त्रस्त) होकर पति को छोड कर पुराने प्रेमी के यहाँ चली जाती है। बाद में वह एक भिक्षुणी के रुप में लेखिका को दिखाई देती है।, जब कि सब लोग समझते थे कि वह मर गई है।

हठीले स्वभाव और संयम के अभाव के कारण पति-गृह छोडने पर भिक्षुणी बनने की नौबत किकी पर आ जाती है।

(५) मामाजी --

कहानी की नायिका रोहिणी एक गरीब पुरोहित की बेटी है, सौभाग्यवश एक उच्चपदस्थ अफसर की पत्नी बन जाने के बाद इतनी घमंडी हो जाती है कि अपने पति की सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए और झूठी शान और शौकत के कारण अपने जुडवा भाई को जो पागल-सा और अकर्मण्य है, भाई मानने से इन्कार कर देती है।

संक्षेप में सगी बहन भी स्वार्थ लिप्सा और महत्वाकांक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा के आगे अपने खून के रिस्ते-नाते को पहचानने से इन्कार कर देती है, यह कहानी इसका ज्वलंत उदाहरण है। पारिवारिक समस्या का चित्रण करनेवाली यथार्थवादी कहानी है।

(६) अनाथ --

शिवानी के 'भैरवी' उपन्यास की तरह यह छोटी-सी कहानी कुष्ठरोग की समस्या पर आधारित है। नायिका 'ऐनी' के पिता 'आयरिश' थे, और माँ, मौसी तथा नाना कुष्ठ रोग के शिकार बने है। ऐनी को समाज ने बहिष्कृत किया है। ऐनी एक हिंदू बंगाली युवक बैनर्जी से प्रेम-विवाह करती है। बैनर्जी के पिता को यह बात मालूम होने पर वे उसे लेकर बंगाल जाते है। ऐनी बैनर्जी के बेटे की माँ बनती है। जो मानहानी, अपमान ऐनी को उसके कुष्ठरोगी माँ की बेटी होने से सहना पडा, उससे अपने बेटे को बचाने के लिए असहाय ऐनी उसे एक हिंदू अनाथालय में भेज कर स्वयं कुष्ठधाम चली जाती है।

स्वयं कुष्ठरोगी न होने पर भी उनकी संतान होना भी समाज की दृष्टि में पाप है, जन्म से लेकर मरणतक ऐसी सन्तान को समाज द्वारा तिरस्कृत बहिष्कृत जीवन जीना पडता है। बेटे को इस शाप से मुक्ति दिलाने के लिए माता का असीम त्याग। इस प्रकार सामाजिक समस्या, अन्तजातीय विवाह समस्या की कहानी है।

(७) फूल —

नायक प्रधान कहानी है, फिल्मी कथावस्तु के ढंग में लिखी गई है। तृप्ति और दीप्ति दो जुड़वा बहनें हमशक्ल होने से, नायक प्यार तो करता है ' तृप्ति ' से लेकिन भूल से उसकी शादी ' दीप्ति ' से होती है। सामान्य कथानक।

(८) सती —

यह एक मनोरंजनात्मक कहानी है, जिसमें लेखिका का मत है। आधुनिक नारी चोर, ठग उठाईगीर पुरुषों के इस क्षेत्र ' में भी पीछे नहीं है। ' मदालसा सिंघानिया ' नामक शातिर नायिका, लेखिका, एक मेजर जनरल की पत्नी, तथा एक पंजाबी स्त्री, जो विस्थापित स्त्रियों के आश्रम की संचालिका है, ऐसे सुशिक्षित, उच्च पदस्थ स्त्रियों को भी ठगती है। अपने त्रुटिहीन धारा प्रवाह हिन्दी, अंग्रेजी भाषा से महिलाओं को प्रभावित करती है, वह बताती है एक दुर्घटना में बर्फ में दबी उसके पति की लाश मिली है, उस लाश के साथ सती होने के लिए वह विदेश (प्रिटोरिया) से भारत आई है।

बीसवीं सदी में सती होने वाली इस स्त्री से प्रभावित होने से, उसकी प्रार्थना पर तीनों महिलाएँ उसके साथ अन्तिम भोजन में शामिल होती हैं। अनन्तर गहरी नींद में तीनों डूबी जाती हैं। सुबह (उठने पर) उन्हें पता चलता है कि वह स्त्री उनके पैसे और गहने, चुरा कर भाग गई है।

आधुनिक नारी का ठगिनी रूप दर्शाने वाली सामाजिक कहानी।

(९) मौसी —

प्रेमविवाह और अंतरधर्मीय विवाह पर आधारित कहानी है। नायिका तिला ने प्रेमविवाह किया है, आधुनिकता के नाम पर मर्यादाहीन बने ससुराल से वह ऊब गयी है। इसी के साथ पति भी उच्छृंखल बन गया है। इस परिस्थिति में

जब वह तीसरी बार गर्भवती बन जाती है, तब पहली बार मायके जाती है। उसकी चचेरी बहन के बच्चे जन्मते ही मर जाते हैं। दोनों एक ही समय पर प्रसूत होती है, तब तिला अपनी बहन तारो की बेटी की जगह अपनी बेटी रखती है। तारो को इस बात की खबर तक नहीं। तारो की बेटी जो तिलाने ली थी, तीन दिन बाद मर जाती है। तिला ससुराल लौटते समय तारो से कहती है —

` तारो मैं नहीं आ सकी, तो अपनी इस बिटिया से कहना, कि एक मौसी थी। `

(१०) मसीहा —

यह नायकप्रधान कहानी है। साधारण-सा कथानक। मनुष्य रूपी मसीहा ` वॉरेन्सी ` की कहानी जो सेवा को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म मानता है।

(११) बन्द घड़ी —

पारिवारिक समस्या पर आधारित सुखान्तिका। इस कहानी की 'माया' नायिका है। उसका पति गिरीश शर्मा अपने विभाग का एक होशियार और ख्यातिप्राप्त इंजिनियर है। शर्मा परिवार में पति की तानाशाही वृत्ति के कारण हमेशा झगडा रहता है। इससे मुक्ति पाने के लिए माया के पास आत्महत्या करने के अलावा दूसरा चारा नहीं (परम्परागत भारतीय नारी जो ठहरी। या तो अत्याचार चुप-चाप सहन कर लो, जब असह्य हो जायेगा, तब जिंदगी खत्म कर दो) वह सोचती है कि उसके मर जाने से उसके पति को अच्छा सबक मिल जायेगा। ठीक उसी समय घर की घडी बन्द पड जाती है और माया को सही समय का पता नहीं चलता और इत्तफाक से उसको आत्महत्या से बचाने करने का साधन बनती है ` बन्द घड़ी `। तभी गिरीश अपने दोनों बच्चों के साथ हँसी मजाक करता हुआ अन्दर आता है। अपने दो बच्चे और पति को देख कर माया को पछतावा होता है वह सोचती है गिरीश उतना बुरा नहीं है और उस बन्द घडी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है।

परिवार की छोटी-मोटी बातों से एकदम कोई निर्णय लेना ठीक नहीं। थोडी शांति से काम लेंगे तो सब समस्याएँ समय आने पर अपने आप सुलझा जाती है।

(२) <u>कहानीसंग्रह</u> — <u>विषकन्या</u> —

कुल कहानियाँ - ६

(१) विषकन्या (२) जेष्ठा (३) शपथ (४) घण्टा (५) के
(६) पुष्पहार।

(१) <u>विषकन्या</u> —

यह लघु उपन्यास कामिनी और दामिनी नामक दो जुडवाँ बहनों की कथा है। इनमें कामिनी इतनी विषभरी है कि वह जिससे प्रेम करती है वही भस्म हो जाता है। अपनी बहन की हमशक्ल होने के कारण कामिनी भ्रांति उत्पन्न करती है। उसका अनुराग इतना दाहक है कि वह सहोदरा के पति को भी भस्मीभूत कर डालती है। अन्त में संसार से अभिशाप्त होकर मुँह छिपाती है। इस प्रकार यह एक अनोखी युवती की कहानी है।

पूर्व कथन के माध्यम से लेखिका ने पाठकों को यह विश्वास दिलाना चाहा है कि कामिनी का चरित्र वास्तविक है। किन्तु यह प्रबुध्द पाठकों के गले नहीं उतरता। कथावस्तु में असंभवता का दोष है।

(२) <u>ज्येष्ठा</u> —

कर्मकाण्ड, ज्योतिष पर विश्वास करने वाले हिंदू समाज में कन्या का ज्येष्ठा नक्षत्र किस तरह बाधा बनता है इसका उल्लेख प्रस्तुत कहानी में हुआ है। नायिका 'पिरी' उर्फ 'हरिप्रिया' सौन्दर्यवती, अमीर बाप की बेटी, तथा लेखिका की बचपन की सहेली है। कूर्मांचल के कर्मकाण्डी परिवारों में कुण्डली देख कर ही विवाह निश्चित हुआ करता है। पहली बार ही सुंदरी पिरी की कुण्डली जब भेज दी

जाती है, तब वह खोटे सिक्के - सी लौट आती है। अल्मोड़ा-भर की कुण्डलियों की रेखाओं का लेखा-जोखा रखने वाले भट्ट जी पिरी की कुण्डली का भेद खोल देते हैं - जहाँ जहाँ पात्र से बड़ा भाई होगा वहाँ वहाँ से कुण्डली ऐसे ही लौट आएगी 'पंतजी, कन्या का ज्येष्ठा नक्षत्र है।'

पिरी के पड़ोसी पांडे जी का बड़ा लड़का राजेश पन्द्रह वर्ष तक घर छोड़कर भाग गया था, एक सिद्ध कहता है कि उसकी मृत्यु हो गयी है। पांडे जी के दूसरे पुत्र देवेश के साथ पिरी की मंगनी हो जाती है।

दुर्भाग्य से विवाह के ऐन मौके पर राजेश आ टपकता है। पिरी की सगाई टूट जाती है। (जेष्ठा नक्षत्रवाली पिरी को राजेश के लिए मौत समझाने से पिरी डॉक्टर बन कर अविवाहित रहती है, देवेश भी अविवाहित रहता है (और राजेश भी जो पिरी को चाहता है, अविवाहित रहता है)। पिरी जेठ की मृत्यु की कामना के लिए तीन माह जाखनदेवी को घृत दीप जलाती है। देवेश माँ की डर से पिरी से विवाह नहीं करते हुए लेकिन दोनों पति-पत्नी की तरह रहते हैं। पूरे बीस वर्ष तक पिरी का जेष्ठा नक्षत्र अपनी करामत नहीं दिखा सकता। देवेश की मृत्यु हो जाती है। तब पिरी उसके लिए अविवाहित रहे राजेश के साथ शादी रचा लेती है।

पिरी की भावी सास पिरी के अनुपम सौन्दर्य के कारण तथा बाद में 'जेष्ठा' नक्षत्र के कारण २० साल तक उसकी प्रतिद्वंद्विनी बन जाती है। पिरी की शादी के बाद लेखिका को नारी का यह छलनामयी रुप समझसे बाहर लगता है।

(३) <u>शपथ</u> —

कभी-कभी मजाक भी किस तरह जान लेवा बन जाता है, इसका सुन्दर चित्रण इस कहानी में हुआ है। एक अप्रैल को किया जाने वाला मजाक 'अप्रैल-फूल' कहलाता है। नायिका शुभ्रा बचपन से आनंदी, परिहास-रसिक-चित्त लड़की है। विवाहोपरान्त अपनी जेठानी से शर्त लगाकर सबसे बड़ी जेठानी कालिंदी भाभी से

ऐसा क्रूर मजाक करती है, और उसे सच शाबित करने के लिए झूठी शपथ भी लेती है, तब उस मजाक को सच मानने से मामी की मृत्यु हो जाती है।

इस घटना से शुभ्रा मनोरुग्ण बन जाती है। उसे लगता है हर रोज रात को मामी आकर कहती है - ` तूने झूठी शपथ खाकर मुझसे मेरा पति छीना, अब तुझे भी पति का सुख नहीं भोगने दूँगी। `

(४) घण्टा —

नायिका लक्ष्मी के द्वारा प्रेम का उदात्त रुप प्रकट करने वाली यह कहानी है। लक्ष्मी के पैदा होने से पहले देवेन्द्र की माँ ने उसे देवेन्द्र की बहू बनाने का फैसला किया था। देवेन्द्र पढ़-लिख कर नौकरी करने लगता है और एक विजातीय लड़की से जो उससे चार साल बड़ी है, विवाह करता है। देवेन्द्र की माँ परलोक सिधार जाती है, देवेन्द्र शहर में ही रहता है।

लक्ष्मी का विवाह ` टी.बी.मरीज और दुहेजू ` रुद्रदत्त ` के साथ होता है और चौदह वर्ष की लक्ष्मी तीसरे ही महीने विधवा बन कर ननिहाल लौटती है। देवेन्द्र के पिता उसे पढ़ा-लिखा कर अध्यापिका बनाते है।

एक बार देवेन्द्र सरकारी काम काज के लिए घर आता है। लक्ष्मी का सौन्दर्य देख कर वह उसे अपनी हवस का शिकार बनाता है। फिर दूसरे दिन गाँव चला जाता है।

बहुत दिनों बाद देवेन्द्र एक बीमारी से मरते मरते बचता है। लक्ष्मी उसके दफ्तर आकर कहती है -- ` मुझे भवाली के गोलथान में एक घण्टा चढ़ाना है, आप की बीमारी में मनौती मानी थी। सबने कहा हाँ अच्छे दामों में बढ़िया घण्टा मिल जायेगा। सोचा आप इतने बड़े अफसर है, आपके कहने सुनने से मुझे अच्छी चीज मिल जायेगी। वैसे भी अब तक मोल तोल करना नहीं आया, हमेशा ठगी ही जाती हूँ देबू दा ....।

(५) के --

प्रौढ कुमारिका डॉक्टर `कमला' उर्फ `के' गरीब एम.एस-सी.पढने वाले शेखर को पहले आश्रय देती है, बाद में यह रक्षक और आश्रय दाती (कमला) ही भक्षक बन जाती है । कमला वर्षों से दबाई अपनी वासना का ग्रास नाजुक, शरीफ शेखर को बनाती है। शेखर के साथ `के' दादी की तरह दिखाई देती है। तब लोग कहने लगते हैं - `डॉक्टरनी ने एक बड़े ही सजीले नौजवान को गोद लिया है, अब अपनी सारी सम्पत्ति भी उसी के नाम लिख रही है।' किसी ने कहा - `अधेड डाक्टरनी की मति मारी गई है। जवान छोकरे की लुटिया ही डुबो दी।'

निराश्रित शेखर `के' के एहसानों के कारण उसके पति की जगह सेवक बन जाता है। तभी उनकी प्रतिवेशिनी संतन्यियों `किशोरी' का आगमन हो जाता है। `के' की अनुपस्थिति में शेखर और किशोरी मिलने लगते हैं। जब `के' को यह बात मालूम हो जाती है, तब वह एक षड्यंत्र रचा कर `किशोरी' को जहर खिला कर मार देती है। अपना मार्ग निष्कंटक बनाने के प्रयास में वह शेखर को खो देती है , जो सब जान गया है।

(६) पुष्पहार --

इस कहानी की नायिका `दुर्गी' का चरित्र देखने पर भर्तृहरि का यह कथन सही लगता है --

`स्त्रियश्चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम्
दैवो ना जानाति कुतो (मनुष्य:)-

पहाडी निम्न मध्य-वर्गीय ब्राह्मण परिवार का बेटा अपने पौरुष की बैसाखियां टेकता देश का मंत्री बनता है। नारी-सौन्दर्य विषधर बन कर कैसे डसता है यह जानते हुए भी वह दुर्गी के मोहपाश में बंध जाता है,उसके लिए पागल-सा होता है। दुर्गी के रिश्ते को मंत्री महोदय ने खोटे सिक्के-सा फेर दिया था। तत्पश्चात उस की शादी दुहेजू सुबेदार से हुई जो लंगड़ा है, दिन-रात नशे में रहता है।

एक साल के बाद मंत्री महोदय को दुर्गी के साथ पूरा गाँव पंचो सहित रंगे

हाथों पकड़ता है। जिन गाँववालों ने उसे असंख्य पुष्पहार पहनाए थे वे ही थप्पड़, घूँसे मार कर उसे अधमरा करा देते हैं। वह एक कोयले की खान में अधमरा होता है। उस अवस्था में एक फौजी के साथ दुर्गी को देखता है। दुर्गी उसे पहचान नहीं पाती। मंत्री की दुर्गी के हाथों पुष्पहार पहनने की इच्छा अधूरी रह जाती है, वैसा सपना देखते देखते उसके प्राणपखेरू उड़ जाते हैं।

नायक और नायिका दोनों की यह कहानी, विवाहिता होकर भी दुर्गी का आचरण वेश्या से भी गया - बीता है। मंत्री दुर्गी से इतना प्रेम करता है कि उसके लिए राजगद्दी तक का त्याग कर खान का मजदूर बन जाता है। संक्षेप में असफल प्रेम की कहानी।

(३) कहानी संग्रह - रतिविलाप --

कुल कहानियाँ - ४

१) रतिविलाप २) गजदन्त ३) मित्र ४) अभिनय।

(१) रति-विलाप --

लेखिका की शान्तिनिकेतन की सहाध्यायी अनसूया पटेल की यह कहानी है। अनसूया को अलौकिक, रति जैसा रूप और धन-दौलत, सब कुछ होने पर भी कुटिल मामा के कारण, कामदेव जैसा सुस्वरूप, अटूट संपत्ति का एक मात्र अधिकारी, किन्तु जिसे मिरगी के दौरे आते हैं, ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह करना पड़ता है। विवाह के बाद एक हादसे में उसके पति की मृत्यु हो जाती है और नाममात्र की विवाहिता अनसूया विधवा बन जाती है।

अनसूया अपने ससुर के साथ बम्बई आकर साड़ियों का कारोबार शुरु करती है। घर में जेल से छूटी, पतिहन्ता 'हीरा' नामक लड़की को पनाह देती है। वही हीरा एक दिन उसके बूढ़े श्वसुर को साथ लेकर पैसे, जेवर लेकर भाग जाती है। कुछ दिनों बाद श्वसुर के खून की खबर मिलती है किन्तु खूनी नहीं मिलता। एक दिन अनसूया हीरा को (जो असल में श्वसुर की खूनी है) देखती है। उसके साथ उसका छोटा-सा बच्चा है, जिसमें अपने श्वसुर की आकृति पाकर वह

चुप बैठती है वह कहती है -- 'मैं चीखती कैसे पगली। ...' दाण भर पहले मेरा नन्हा देवर मुझसे अपनी उन परिचित आँखों के भिक्षापात्र में दया की भीख जो माँग गया था।'

(२) गजदन्त --

इस कहानी का नायक गिरीन्द्र सुंदर, सुशील, परिश्रमी, गृह-कृत्य-दक्ष निम्मी को चाहता है। किन्तु लक्ष्मी के आगे कामदेव के कठिन बाण भी परास्त होते हैं। गिरीन्द्र माँ के कहने पर मोटे शरीर वाली, बदर्थ, अधरों को चीरने वाले दो लम्बे लम्बे दाँतों वाली अमीर लड़की से विवाह करता है। दहेज प्रथा को सूचित करने वाली सामाजिक कहानी है।

(३) मित्र --

पारिवारिक समस्याओं को चित्रित करने वाली इस कहानी की नायिका 'राधा' है। अपने पति के रईस मित्र का यथायोग्य आतिथ्य सत्कार करती है। जाते समय वह कुछ रुपये उधार लेते जाता है, उन्हें लौटाना भूल जाता है। महँगाई के इन दिनों में राधा त्रस्त होकर उस मित्र को जली-कटी सुनाती है, उसी वक्त वह मित्र आकर रुपये लौटाता है। राधा को पश्चाताप होता है आर्थिक समस्या।

(४) अभिनय --

दो जुड़वाँ पुत्रों में बड़ा पुत्र डॉक्टर बनते ही विजातीय डाक्टर पत्नी रजनी पटेल ब्याह कर घर लाता है। उसकी मृत्यु के बाद रजनी अपने देवर के साथ अवैध सम्बन्ध प्रस्थापित करती है। उस शेखर को रजनी के चंगुल से छुड़ाने के लिये एक पहाड़ी सुन्दरी से उसका विवाह किया जाता है। नवविवाहिता जीवन्ती को सुहागरात के पूर्व ही भाभी और देवर (शेखर) के संबंधों का पता चलता है। वह मायके चली जाती है। कालान्तर में गाँव की सीधी-सादी जीवन्ती एक महान अभिनेत्री बन जाती है। एक बार शेखर को पैसों की जरूरत होने से वह जीवन्ती तक पहुँचता है। पति को देख कर जीवन्ती को अपने सुहागरात की घटना

याद आती है, और शूटिंग के दरम्यान वैसा ही एक सीन जो बार बार ' रिटेक ' हो रहा था, एकदम सफल हो जाता है। लोग कहते हैं, इसे कहते हैं अभिनय। वह दृश्य था - ' सहसा नववधू चौंक कर देखती है, वह नर्तकी शराब के नशे में चूर नाशो को अपने हाथ का सहारा देकर कार से उतार रही है। ' जीवन्ती को रोने का ऐक्टिंग करना था, किन्तु वह सचमुच बिलख - बिलख कर रो पड़ती है - ' आज अपने चलचित्र - जगत के संक्षिप्त जीवन काल में, वह पहली बार अभिनय नहीं कर रही थी। '

(४) कहानीसंग्रह - माणिक --

कुल कहानियाँ - ८

(१) माणिक (२) तर्पण (३) जोकर (४) स्वप्न और सत्य

(५) चार दिन की (६) कालू (७) आमि जे बनलता

(८) दानामियाँ।

(१) माणिक --

एक अविवाहिता बड़ी बहन के त्याग तपस्या और फिर बाद में उभर कर आने वाली उसी नारी की यौन कुंठा की अद्भुत कहानी है' माणिक' यह दीर्घ कहानी। कॉलेज में प्रिन्सिपल, बाद में स्कूल इंस्पेक्ट्रेस बनी नलिनी मिश्रा अब वानप्रस्थ जीवन जी रही है। ढलती उम्र में जीवन की दमित इच्छाएँ गुब्बारे से फूटती हैं, जब ' वीना बाटलीवाला' उसके जीवन में आती है। नलिनी को अपने आकर्षण में फँसा कर वह पेशेवर हत्यारिन उसकी निर्मम हत्या करके उसकी संपत्ती लूट कर भाग जाती है।

यह भी शिवानी की ' सती ' कहानी की ' मदालसा सिंघानिया ' की तरह आधुनिक ठग युवती है, जो अपने अपूर्व कौशल से लोगों को ठगाती है किन्तु साथ ही पेशेवर हत्यारिन भी है, इसलिए खून करने में हिचकिचाती नहीं।

(२) तर्पण —

एक बलात्कारिता के प्रतिशोध की कहानी है। तेरह वर्ष की अबोध बालिका पुष्पा पन्त भोलादत्त की कामवासना का शिकार बनती है। इस सदमें से माँ चल बसती है, सतशील पिता आत्महत्या करते हैं। पुष्पा और उसका भाई किशन अनाथ होते हैं। पुष्पा भाई को पढा कर बडा करती है। स्कूल में हेडमास्टरनी बन जाती है। बीस साल बाद वह अत्याचारी भोलानाथ मंत्री बन कर पुष्पा पन्त के हायस्कूल में आता है। पुष्पा को देख वह उसे पुरानी घटना याद दिलाता है। तब क्रोध से पुष्पा पन्त का शरीर थर-थर काँपने लगता है। एक क्षण को सब कुछ भूल कर वह एक बडा-सा घन लेकर पन्त से भोलादत्त के सिर पर मारती है, भोलादत्त का सिर फट जाता है।

पुलिस के साथ जाने से पहले वह पीताम्बर पांडे से मिल लेती है। पीताम्बर पांडे और पुष्पा पन्त दोनों एक-दूसरे से चाहते हैं, पीताम्बर उससे शादी भी करना चाहता था, उससे कहती है —

` पीताम्बर... जानते हो, मैंने हत्या क्यों की ? आज से वर्षों पूर्व इस दानव ने मेरा सर्वस्व हरण किया था। उसी लज्जा ने मेरे पिता के प्राण लिए, माँ को दिल का दौरा पडा और वह भी चली गई। आज इतने वर्षों से मैं ने पुत्री होकर भी माता-पिता का तर्पण किया पीताम्बर। `

(३) जोकर —

अपने खोये हुए बेटे के लिए मातृ-हृदय की टीस तथा व्यथा की यह कहानी है। श्रीमती तिलोत्तमा आकाशवाणी की सुप्रसिध्द गायिका है। राजा सतीश देव वर्मन की इकलौती राजकन्या बंगाल के समृध्द जोत-दारों की बहू बनती है - सौन्दर्य और प्रतिभा के बल पर। तिलोत्तमा का एकमेव पुत्र किलांग, बौना और कुरूप व्यक्तित्व का है। उसके पिता उसको ले जाकर किसी सर्कस में भरती कर देते है। माँ को मालूम होने पर वह अपने अभिन्न अंश को ढूँढने गाँव-गाँव भटकती है। तिलोत्तमा सोचती है — ` माँ-बाप को जीवन-भर रुला-रुला कर, समग्र संसार को हँसाएगा मेरा बेटा। इससे बडी विडम्बना और क्या हो सकती थी। ` लेखिका

के साथ वह एक सर्कस में अपने बेटे जैसे जोकर को देखती है। मैनेजर कहता है, ` वह इसी कम्पनी के कलाकार दम्पत्ति का बेटा है। ` तिलोत्तमा यह सुनते ही हिस्टेरिकल हो जाती है।

(४) स्वप्न और सत्य --

ऐसा कहते हैं कि कभी कभी स्वप्न भी सच हो जाते हैं। लेखिका को एक ऐसा अनुभव आता है, उसकी यह कहानी है। लेखिका एक दिन एक भयावह स्वप्न देखती है जो कुछ दिनों बाद जीवन में वास्तविकता बन कर घटीत होता है। ठीक स्वप्न के दृश्य की तरह एक निर्जन जंगल से गुजरते हुए एक नवजात शिशु को पैरों के पास लिटाया गया पाती है। लेखिका, जो तब सत्रह वर्ष की बालिका थी, समाज के नीतिनियमों को जानती है अत: चाहने पर भी उस बच्चे को उठाकर घर नहीं ले जा सकती। संवेदनशील बालिका का मनोवैज्ञानिक चित्रण।

` .... किन्तु कुत्ते के पिल्ले को पालना कितना सहज है, मनुष्य के दुधमुंहे को पालना कितना कठिन। श्वान शिशु का कुल-गोत्र समाज नहीं मांगता, उसके जनक का परिचय उसके जीवन के लिए अनिवार्य नहीं होता, किन्तु मानव-शिशु के जनक का अभिमान उसके प्रत्येक श्वास के लिए अनिवार्य हो उठता है। `

यह कहानी प्रबुध्द पाठकों के गले नहीं उतरती। कहानी के आरंभ में लेखिका ने कहा है कि यह सत्याधारित कथानक है, मेरे विचार से है -- यह केवल मनोरंजनार्थ लिखी गयी कहानी है।

(५) चार दिन की --

` ये माना जिन्दगी है चार दिन की, बहुत होते हैं यारों चार दिन भी। उपर्युक्त ख्यालात वाले नायक की यह कथा है। इस कथा के नायक साहबजादे अब्दुल वालिद खान, लेखिका के पिता के घनिष्ठ मित्र थे। उनकी हस्तलिखित आत्मकथा से उनके वैभवशाली स्मृतियों को लेखिका ने चित्रित किया है। अंतिम कष्ट प्रद दिनों में वे उपर्युक्त शेर सुनाते हैं। साधारण सी कथा आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई संस्मरणात्मक कथा है।

(६) काळू --

यह भी नायक प्रधान कहानी है। कहानी नायक है काळू, जब लेखिका शान्तिनिकेतन में पढ़ती थीं, तब काळू का आगमन हुआ। बेहद काला होने से 'काळू' नाम पड़ गया, यह अनाथ और अन्धा लड़का अपनी सुरीली कण्ठ के कारण सारे आश्रमवासियों का लाड़ला बना। नेत्रहीन होने पर भी पदचाप से वह व्यक्तियों को पहचानता था। लेखिका आश्रम छोड़ते समय काळू से कहती है ... 'ईश्वर ने चाहा तो पौषोत्सव में फिर मिलेंगे।' काळू को शायद कुछ पूर्व संकेत मिल गया है, वह कहता है, 'नहीं, अब उतनी दूर से तुम आ पाओगी ? कोई बात नहीं, पौष के मेले में न सही, परलोक के मेले में तो मिलना होगा ही गौरा दी।'

(७) आमि जे बनलता --

असफल प्रेम कहानी की कहानी है। शिलांग से घर लौटते एक बार रेल यात्रा में यह नायिका मिलती है जो लंगड़ी है, उसका नाम है बनलता। अत्यंत सुन्दरी है, जिसके लिए चार-चार लड़कों ने आत्महत्या की है। पगली के रूप में डिब्बे में घुस आती है। उसके नाच-गाने से, चंचल कटाक्षों से वह अपने पेशे का परिचय देती है, और अचानक धाराप्रवाह अंग्रेजी में अपनी कहानी कहती है। एक फिरंगी साहब उसे बहुत चाहता था। एक बार उसे अपने साथ शिकार खेलने ले जाता है और तब मचान टूटने के कारण नीचे गिर कर बनलता की टाँग टूट जाती है। 'होश आया तो देखा टाँग ही नहीं फिरंगी प्रेमी भी चला गया है अब तो गाना गाती है वह ....

'आमि शो की हाय फेले जावा माला ?

(हाय, मैं क्या फेंकी गई माला ही हूँ ?)

इतने वर्षों बाद भी टीस-भरे गीत की पंक्ति लेखिका के जीवन की सबसे गहरी याद बन कर रह गई है।

(८) दाना मियाँ —

यह भी एक रेखाचित्र है, दाना मियाँ नामक एक पठान का। ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं मगर अंग्रेजी पुस्तकें बेचने-खरीदने का धंधा करनेवाले दानामियाँ नैनिताल के लोगों के लिए सुखद स्मृति छोड़कर चल बसते है।

(५) कहानी संग्रह - रथ्या —

कुल कहानियाँ - ६

(१) रथ्या (२) अपराधी कौन (३) तोप

(४) मधुयामिनी (५) प्रतिशोध (६) मरण सागर पारे।

(१) रथ्या —

असफल प्रेम की कहानी। नायिका बसंती अनाथ है, वैद्यजी के पुत्र विमलानन्द और वह दोनों एक दूसरे को चाहते है। विमलानन्द के पिता द्वारा बसन्ती की कुण्डली खोटे सिक्के-सी फेर दी जाती है। वह घर छोड़ कर सर्कस में भरती होकर खूब नाम कमाती है। सर्कस का मैनेजर उसका शील भंग करता है फिर एक विदेशी महिला से भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों नृत्य प्रकारों में बसन्ती पारंगत होती है। खूब प्रसिध्दी और प्रशंसा प्राप्त करती है। एक दिन उसकी विमलानन्द से मुलाकात होती है, वह बसन्ती का परिवर्तित रुप देख कर आश्चर्य से दंग रह जाता है। विवाहित विमलानन्द अपनी दूसरी पत्नी के रुप बसन्ती को ले जाना चाहता है। लेकिन बसन्ती नहीं जाती। तब विमलानन्द कहता है — मतलब यह है बसन्ती, वेश्याओं के मुहल्ले तक जाने वाली पतली सड़क को 'रथ्या' कहते है। मतलब अगर कोई लड़की उस सड़क पर से गुजरे तो वह वापस नहीं आती। इस पर बसंती उत्तर देती है —

' छिप कर जूठन खाना सहज है छोटे वैद, भाई-बिरादरी के सामने जूठी पत्तल में खा पाओगे ? '

विमलानन्द अपनी पतिव्रता पत्नी सुरसती (सरस्वती) को याद करके बसंती के उपहारों को लौटा कर चला जाता है।

(२) अपराधी कौन —

यह कहानी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है। स्त्रियों की आभूषण-प्रियता उनकी कमजोरी होती है, जो कुछ प्रसंगों में उन्हें चोरी करने के लिए भी प्रवृत्त करती है। अमीर घराने की संपन्न स्त्रियाँ भी इसके मोह से बच नहीं सकतीं। नागिन के आकार की, लचकती, सोने की करधनी के कारण मीना और अमला, जो रिश्ते में ननद-भाभी है, इनमें ईर्ष्या उत्पन्न होती है। पहले भाभी उसको चुराती है, बीस वर्ष बाद मीना उसे चुराकर चली जाती है, रास्ते में उसे पता चलता है कि उस करधनी को भाभी ने फिर मीना के सूटकेस में से चुराया है।

ज्योतिषशास्त्र पर विश्वास रखने वाली, अलंकारों के प्रति आत्यंतिक अभिलाषा रखनेवाली, परम्परावादी नारियों को चित्रण इस कथा में किया है।

(३) तोप —

इस कहानी की नायिका ' तोप ' का वास्तविक नाम था ' क्रिश्चियाना वैरोनिका टॉमस ' । उसके कण्ठ के पुरुष-स्वर, छः फुटे मर्दाने शरीर और कृष्ण वर्ण के कारण किसी कला मर्मज्ञ ने उसका नाम ' तोप ' रखा था।

फौज में कैप्टन बनी तोप वहाँ से छुट्टी पाने पर मरीजों के लिए एक रेस्ट हाउस चलाती है। एम.एस.सी.करनेवाले, बाईस वर्ष के राजेन्द्र के साथ पचास वर्ष की तोप विवाह रचाती है। उसकी मृत्यु के बाद फिर एक मेडिकल के छात्र ' सैम्युअल ' से विवाह करती है। यह सिलसिला शायद तोप की मृत्यु तक चलता रहेगा।

(४) मधुयामिनी —

कहानी की नायिका के पिताजी पहाड़ी (कुमायूवासी) है, अब थाइलण्ड जाकर बसे है। उन्होंने बहुत पैसा भी कमाया है। उनकी छठी बेटी जन्मतः गूंगी और बहरी होने पर भी अलौकिक सौन्दर्यवती है। तिवारी जी उसके दोष

CARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

छिपाकर एक ऐसे लड़के से उसका विवाह करा देते हैं, जिसकी एक आँख काँच की है।

लेखिका को इस बात का पता चलने पर वह सोचती है - विवाह की केवल एक रात (सुहागरात) उसके लिए मधुयामिनी बनेगी। कल जब उसके पति, सास, ननद को उसके असली रूप का पता चलेगा, तब क्या होगा ?

सामाजिक समस्या पर आधारित कहानी । गूंगी - बहरी लड़की के दोष छिपा कर ब्याहने से भविष्य काल में उस पर क्या बीतेगी, यह माता-पिता नहीं सोचते।

(५) <u>प्रतिशोध</u> --

पारिवारिक समस्याओं पर आधारित कहानी है। अति महत्वाकांक्षिणी नारी की समस्याओं का चित्रण भी इसमें किया गया है। आई.सी.एस.अफसर शंकर की पत्नी सौदामिनी में वे सब गुण हैं, जिनका एक ऊँचे अफसर की पत्नी में होना अनिवार्य है। ` वह उन लापरवाह गृहणियों में से नहीं थी, जिन्हें पति के ऊँचे ओहदे की समृध्दि गृहस्थी के प्रति उदासीन बना देती है। धोबी उसका एक रूमाल भी खो देता तो वह पैसे काट लेती। .... नौकरों को ही नहीं, पति के अधीनस्थ अफसरों को भी तर्जनी पर नचाती रहती।

सास-ससुर के लिए उसके घर में कोई स्थान नहीं है। एक अफसर का पुत्र जो आई.ए.एस. पढ़ रहा है, उसके साथ मेलजोल बढ़ाने के लिए अपनी पुत्री को प्रेरित करती है। ताकि दहेज जुटाने की आवश्यकता न रहे। वह कहती है ` इस युग के प्रत्येक बुध्दिमान माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपनी सन्तान को ऐसे प्रेम-विवाह के लिए उत्साहित करें। सौदामिनी का वर्णन उसके स्वभाव को स्पष्ट करता है -- ` ऐसी रोबदार पत्नियों का व्यक्तित्व प्रतिभा संपन्न पति के व्यक्तित्व को दबा कर जैसे कुंठित कर देता है, वैसा ही शंकर का व्यक्तित्व भी दब कर सिकुड़ गया था। उनकी लड़की एक मुसलमान के साथ भाग जाती है, इस बात के लिए शंकर सौदामिनी को दोषी ठहराता है।

मानसिक और शारीरिक दोनों ओर से पत्नी से अवहेलना प्राप्त शंकर कुंठित होकर `कॉल गर्ल` की पनाह लेता है। असल में वह कॉल गर्ल `कोयल` उसके बेटी की हम उम्र है, एक बड़े अफसर की बेटी होती है, शंकर से सचमुच प्यार करती है अन्त में अवैध मातृत्व से बचने के लिए आत्महत्या कर लेती है। समाचार पत्रों में शंकर का नाम इस घटना से जोड़ा जाता है। सौदामिनी अपने पति की निर्भर्त्सना करती है, फिर भी अपना हीरों का सेट बेच कर उस चिठ्ठी को हासिल करती है, जो शंकर के विरुध्द गवाही दे सकती थी।

शंकर के इस गुनाह की सजा वह उसकी शिखा को काट कर देती है जिस `शिखा` को शंकर आजीवन रखना चाहता था। वह कहती है `पाखंडी, देखो, मैंने आज तुम्हारा आखिरी मुखौटा भी उतार दिया है। इतने सालों में आज मैं अपना बदला ले पाई हूँ।

(६) <u>मरण सागर पारे</u> --

मातृत्व का मूर्तिमंत प्रतीक, बसंती दीदी का यह संस्मरण है। बसंती दीदी से लेखिका का दुहरा रिश्ता था, शादी के बाद तो सगी न हो पर सगी नानज्यू (बड़ी ननद) से घनिष्ठ रिश्ता जुड़ गया। लेखिका ने नारी के कितने रूप देखे हैं, किन्तु आज भी उसके अंत:चक्षुओं में सबसे अधिक उभरने वाला चेहरा है बसंती दीदी का।

कैशोर्यावस्था में विधवा बनी बसंती दीदी ने अपने पुत्र-पुत्रियों के अलावा अनाथ,उन्नीस सन्तानों को अपनी वात्सल्यमयी गोद में लेकर खोई माँ का वात्सल्य दिया था। इसके अलावा न जाने कितने अनाथ भानजे - भतीजियों, आत्मीय-अनात्मीयों के कल-कंठ से उनका पूरा घर गूंज उठता। बसंतीदीदी उन अनाथ पथिकों को `निष्काम कर्म भावना` से पाल-पोस कर,शिक्षित कर के विवाह करा देती थी। इसी बसंती दीदी ने लेखिका को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पाठ पढाया - नेकी कर दरिया में डाल।

लेखिका को भी विपत्ति के कठिन क्षणों में वह सहारा देती है, तब लेखिका को इस पंक्ति की सार्थकता स्पष्ट होती है ---

` स्त्रीणां विहत्प्रतीकारे स्त्रियएवावलम्वनम् ।`
अर्थात स्त्री ही स्त्री का विपत्ति से उध्दार करती है, पुरुष नहीं ।`

बसंतीदीदी ने असंख्य मौतें देखी है ,अत: वह मौत की आहट को पहचानती है। लेखिका के पति की मृत्यु की आहट को पहचान कर लेखिका को सचेत करती है। मृत्यु से जिसका परिचय इतना घनिष्ट था, उस छलनामयी की पदचाप को जिसने एक नहीं, अनेक बार सुना था, क्या वह कभी उसे पहचानने में भूल कर सकती थी ?

अपनी असंख्य सन्तानों में से अन्तिम,अनाथा मानजी का कन्यादान कर बसंती दीदी ने सदा के लिए आँखें मूँद ली। लेखिका को लगता है, ` शायद ऐसे ही अमर प्राणों के लिए रवीन्द्रनाथ ने यह पंक्ति लिखी थी ---

` मरण सागर पारे
तो मार अमर तोमा देर स्मरि ।`

--- मरण-सागर के पार भी तुम अमर हो ,
हम तुम्हारा स्मरण करते हैं।

(६) कहानी संग्रह - गैन्डा ---

कुल कहानियाँ --- ५
(१) गैन्डा (२) भीलनी (३) चलोगी चन्द्रिका (४) दण्ड
(५) मन का प्रहरी ।

(१) गैन्डा ---

यह लघु उपन्यास एक ऐसी सहेली की मर्मस्पर्शी कहानी है, जो अपनी सखी के साथ सौतिया डाह से भरकर भरपूर घृणा करने लगती है। सुपर्णा और राज मेहरा बचपन की सहेलियाँ, जो के.जी.से कॉलेज तक एक साथ पढ़ी लिखी थीं। सुपर्णा ने मेजर जनरल रोहिताश्व जैसा ग्रीक देवता-सा सुन्दर पति पाया और राज जैसी प्रतिद्वन्द्विनी को जिसने शैशव से लेकर कैशोर्य की प्रत्येक प्रतिद्वन्द्विता

में पछाड़ा था, उसे वैवाहिक जीवन के अखाड़े में चारों खाने चित किया। राज का पति अमीर तो है किन्तु बौना, कदर्य गंजा है, जिसे राज 'गेन्डा' नाम से संबोधित करती है।

सुपर्णा के पति को राज अपनी ओर आकर्षित कर के उससे संबंध स्थापित कर लेने में कामयाब हो जाती है। आत्मीयता के बीच सुलगता यह जटिल अहसास है, जो दोनों को व्यथित कर देता है। सुपर्णा पढ़ीलिखी होकर भी तर्क-वितर्क भूल-बिसर कर एक मौलवी के पास जाकर राज पर जादू-टोना करती है। तत्पश्चात असल में राज की मृत्यु होटल के खाने से 'फूड पॉइज़निंग' होने से होती है। सुपर्णा सौत से छुटकारा पाती है, किन्तु रोहित उसी को राज की मृत्यु का कारण समझ कर उससे मन से दूर होता है।

(२) मीलनी —

आत्मकथात्मक शैली में लिखी यह कहानी कुमारी माता और (अवैध सन्तान), दो बहनों की सुन्दरता और कुरुपता के कारण उत्पन्न हुई पारिवारिक समस्याओं तथा अन्य सामाजिक समस्याओं को उजागर करती है।

दो बहनें सुहासिनी और विलासिनी में बड़ी बहन सुहासिनी कुरुप है तो छोटी विलासिनी अत्यंत सुन्दर। छोटी बहन को देख कर बड़ी को कोई पसन्द नहीं करता। छोटी को छिपा कर रखने पर 'गौतम चक' नामक आकर्षक कद और रंग के युवक से उसका विवाह संपन्न हो सकता है। यहाँ न केवल स्त्री की कुरुपता बल्कि सुन्दरता भी समस्या बन कर खड़ा होती है।

विलासिनी जब दीदी के विवाह से पूर्व गौतम को देखती है, तब वह उस पर आशिक होती है। उसके लिए अविवाहित रह कर डॉक्टर बन जाती है। गौतम भी उसकी ओर आकर्षित होता है, और जो नहीं होना चाहिए था, वह हो जाता है। सुहास अपने पति और बहन को जिस अवस्था में देख लेती है, उसका माथा ठनकता है। रिवॉल्वर से सौत बनी सगी बहन को निशाना बनाना चाहती है किन्तु गोली उसके पति को लगती है। यह देख वह भी आत्महत्या कर लेती है।

मरने से पहले बहन को बचाने के लिए बयान में कहती है — ' मेरे पति की बाँहों में एक अर्धनग्न काली-कलूटी सी भीलनी पडी सो रही है। ... मारना चाहा था भीलनी सौत को, पर निशाना चूक गया। '

विलासिनी को अवैध मातृत्व प्राप्त होता है। कुमारिका विलासिनी आर्थिक रुप से संपन्न होने से संतान को पालन-पोस सकती है किन्तु सामाजिक मर्यादा के कारण उसका मातृत्व खुले आम स्वीकार नहीं सकती। ' किसी कुमारिका की अनाथ बेटी ' बता कर उस संतान को पालती हुबहू पिता जैसी बेटा को देख कर सुहासिनी की माँ जान जायेगी कि वह ' भीलनी ' कौन थी, अत: वह अपने माँ-बाप को मुँह दिखाने के काबिल नहीं, काबुल जाकर बस जाती है —

' दिदा मुझे माफ कर गई, पर उस बडी अदालत ने मुझे माफ नहीं किया। दिया है आजन्म कारावास - आत्मीय स्वजनों के चेहरे देखने को भी तरसने का कठोर दण्ड। इसी से शायद वह उदार न्यायाधीश मुझे काबुल भेज रहा है, जैसे पहले कभी हत्या के अपराधी को कालापानी भेज दिया जाता था, है ना ? '

(३) <u>चलोगी चन्द्रिका</u> —

माता-पिता विहीन चंद्र वल्लभ को उसकी नानी दरिद्रावस्था में अनेक दु:ख झेल कर पढाती है। उसके बडे भाई की साली चन्द्रिका के सौन्दर्य से मोहित होकर उसी से विवाह करने का प्रण करता है। चन्द्रिका भी चन्द्रवल्लभ से मिलती रहती है। परन्तु उसका व्यवहार कुशल पिता बेटी के लिए चन्द्रवल्लभ की तुलना में आर्थिक दृष्टि से समृध्द,संपन्न घराने के इकलौते पुत्र सदानन्द को पसंद करता है। सदानन्द ने उन पर एहसान भी किए है। अन्त में लक्ष्मी ने सरस्वती को अंगूठा दिखा ही दिया।

समय गुजर जाता है। अब चन्द्रवल्लभ को राजनीतिने समृध्दि,वैभव,यश, कीर्ति से लाद दिया है। पत्नी का देहांत हो जाता है, इकलौते पुत्र ने विदेश को ही अपनी मातृभूमि मान लिया। वंध्या चंद्रिका को पति ने अपमानित कर घर से बाहर निकाल दिया था। वह अब प्रधानाध्यापिका बन गयी। इस बीच

विधवा भी हो चुकी है। इतने वर्षों पश्चात दोनों फिर से स्वतंत्र बन गये।

चन्द्रवल्लभ के जीवन में प्रेम केवल एक ही बार आया था, जो मूर्ति चन्द्रिका की तब हृदय में स्थापित हुई थी, वह अब भी वैसी ही अडिग खडी थी। चंद्रवल्लभ चंद्रिका को और एक मौका देकर पूछना चाहता है — ` चलोगी चंद्रिका ` ? चंद्रिका को साथ ले जाने के लिए गाँव जाता है अपने पुराने संकेत स्थल पर मिलने के लिए उसके पहले वहाँ जाता है, इसे चौंकाने के हेतु छिप कर बैठता है। चंद्रिका का आपादमस्तक बदला हुआ रुप देखकर उसके आगे आने का साहस नहीं कर सकता। उसके मन में प्रेम का महल जिस सुन्दरता की नींव पर वर्षों तक खडा था वहीं नीव (चंद्रिका की कुरुपता से) ध्वस्त होकर अब पुरानी खण्डहर के समान लगने लगी।

चन्द्रवल्लभ को पहली बार लग रहा था कि उसने चंद्रिका को हमेशा-हमेशा के लिए खो दिया है। ` चंद्रवल्लभ की मन:स्थिति कुछ इस प्रकार होती है — ` आज तक जो दिव्यमूर्ति,प्रेयसी-रुप में किसी ताबूत में सुरक्षित शव की भाँति,उसके हृदय में ज्यों की त्यों धरी थी, वह किन्हीं अज्ञात विकार के कीटाणुओं के संसर्ग से सहसा क्षयग्रस्त हो बीभत्स बन गई थी। `

(४) <u>दण्ड</u> —

नारी के समर्पण की, निर्व्याज प्रेम की और पढे-लिखे लोगों कौतूहल-कपट की यह कहानी है। षोडशवर्षीय संथाल-कन्या ` चांदमनी ` जो अत्यंत रुपवती, घमंडी है चोबीस वर्षीय डॉक्टरी पढ रहे मि.सिंह के प्रेम जाल में फँस कर अपना सर्वस्व अर्पित कर देती है। जब वह पेट से रहती है, तब डॉक्टर डर कर कुछ रुपया चांदमनी के पिता के हाथ में रख कर भाग जाता है। शहर में वह एक ख्याप्ति-प्राप्त डॉक्टर बन जाता है। उसका बेटा ` मृत्युंजय ` भी विदेश से एफ.आर.सी.एस.बन कर पिता के साथ काम करने लगता है। अचानक मृत्युंजय ` फूड पॉयझनिंग ` से २४ वर्ष की अल्पायु में चल बसता है, (पत्नी तो २५ वर्ष की अल्पावस्था से चल बसी थी। इस घटना से डॉक्टर सिंह का मन कहने लगता है कि भगवान ने चांदमनी से की बेवफाई का ` दण्ड ` इस रुप में दिया है।

अट्ठाइस वर्ष बाद फिर डॉ. सिंह चांदमनी के यहाँ जाता है। झोंपड़ी से विलाप का स्वर सुन कर खिड़की से झाँक कर देखता है। हूबहू मृत्युंजय की अनुकृति, चांदमनी और सिंह का बेटा ' बलाई ' की अरथी उठाई जा रही थी। मृत्युंजय की मृत्यु से अधिक कड़ी सजा, दण्ड भगवान उसे ' बलाई ' की मृत्यु से देता है --

जिसने जीवन-भर कभी जन्मदाता का स्मरण नहीं किया, उसी नास्तिक संतान के कमजोर मुकदमे का निर्णय देने शायद वह न्यायप्रिय न्यायाधीश उसे इतनी दूर ले आया था।

(४) मन का प्रहरी --

अनमेल विवाह और प्रौढ़ावस्था में उभर आने वाली यौन कुण्ठा की कहानी है। कहानी की नायिका ४५ वर्षीय अंग्रेजी की प्राध्यापिका अनुराधा पटेल। युवावस्था में उसका प्रेमभंग हो चुका है। अपने एक मेधावी छात्र १८ वर्षीय ' प्रियतम महंती ' से विवाह करके विदेश चली जाती है। तदनन्तर अनु ने एक वर्ष की लम्बी मधुयामिनी में अपने वर्षों के दबे सारे अरमान पूरे कर लिए थे। ... ... इस विश्वव्यापी हनीमून के बीच उसे अचानक मिल गया था उसका पुराना प्रेमी मधुकर। '

अनु को फिर मधुकर की चाह पैदा होती है। एक साल तक चोरी-छिपे उससे मिलती रहती है। अन्त में एक दिन एक चिट्ठी प्रियतम के लिए छोड़कर मधुकर के साथ चली जाती है --

' हम दोनों ने बहुत बड़ी भूल की थी, प्रियतम। संसार की कोई भी शक्ति हम दोनों के बीच वयस की इस दूरी को पार नहीं सकती।

लेखिका को अपनी अंत: प्रेरणा (मन का प्रहरी) पर बड़ा गर्व था। अनुराधा के संतनी से चेहरे को देख कर लेखिका को अनुमान किया था, वह उसके बर्ताव से गलत निकला।

(७) कहानी संग्रह – किशाकुली

कुल कहानियाँ – ७

(१) किशाकुली का ढाँट (२) दण्ड (३) मन का प्रहरी
(४) चन्नी (५) तोमार जे दोक्खिन मुख (६) दादी ।

इनमें से ' दण्ड ' और ' मन का प्रहरी ' इन कहानियों का परिचय गैन्डा कहानी संग्रह के अंतर्गत कराया गया है ।

(१) किशाकुली का ढाँट –

इस लंबी कहानी में एक पगली के अवैध मातृत्व की तथा दर्दभरी अनोखी कथा है । पण्डिताइन नि:सन्तान होने के कारण पगली शिशना को अपने घर में रख लेती है । पण्डितजी इस बात से चिढ कर हर वक्त पगली को दुत्कारते रहते हैं । पगली एक-( ) बार घर छोड कर चली भी जाती है, किन्तु दूसरी बार आती है तो अपना सर्वनाश करके । फिर भी पण्डिताइन उसे रख लेती है । उसके लड़का होता है, नाम रखा जाता है ' कर्ण ' (इसी बीच पण्डितजी घर छोडकर चले जाते हैं और वहाँ से पत्र द्वारा सूचित करते हैं कि किशाकुली का ढाँट (ढाँट – अवैध सन्तान) नहीं है, मैं ही उसका बाप हूँ ।) इस तरह किशोर (वय) की उन्मादिनी और डरपोक, कामी पण्डितजी की कथा है ।

(२) तीन कन्या –

साधारण-सी कथा है । एक रूढिवादी, मिथ्या आडम्बरवादी माँ की कथा है । वह देखने में साधारण-सी तीन कन्याओं की माँ है । सबसे छोटी कन्या ' बेबी ' की प्रतुल के साथ सगाई हुई है । हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार जब तक बडी बहनों का विवाह नहीं होता, तब तक छोटी बहन नहीं ब्याही जा सकती । माँ रायबहादूर बॅनर्जी परिवार की झूठी मानमर्यादा का पालन करने के लिए दोनों को एकान्त में मिलने का अवसर प्राप्त नहीं होने देती । प्रतुल सगाई तोड़कर दूसरी के साथ विवाह रचाता है । तीन कन्या वैसी ही रह जाती हैं । एक दिन प्रतुल( )

अपनी नवविवाहिता के साथ माँ और तीन कन्याओं से अचानक मिलता है, तब कहता है — ' मेरी इस पत्नी को विवाह से पूर्व, मेरे साथ, रात आधी घूमने में कोई आपत्ति नहीं रही ... गुड बाय एण्ड गुड लक तीन कन्या । '

(३) चन्नी —

बिना माँ-बाप की लड़की चन्नी चाचा-चाची के एहसानों पर जीती है। सोलह वर्ष की होने पर उसका रूप गाँव में सनसनी मचा देता है। उसके मुसलमान पड़ोसी इरफान अहमद के ढेर से प्रेम-पत्र उसे आने लगते हैं। किन्तु उसका विवाह ' योगेन ' से हो जाता है। योगेन द्वारा बंधनों में जकड़ी तीन बच्चियों की माँ, चौबीस वर्ष की चन्नी पारिवारिक सुख की अपेक्षा से प्रेमी का प्रेम श्रेष्ठ मान कर भाग जाती है। कहानी के अन्त में जो हम मन में सोचते हैं वही सोच कर लेखिका कहती है — ' मैं तो स्तब्ध थी। मन ही मन में जानती थी कि चन्नी कभी भाग नहीं सकती। भागने की भी तो आखिर एक उम्र होती है। चौबीस वर्ष की पढ़ी लिखी तीन बच्चियों की माँ चन्नी भला किसके साथ भाग सकती थी ?

(४) तोमार जे दोकिसन मुख —

नायक-प्रधान कहानी। पन्द्रह वर्ष पूर्व मृत ' राघवन ' की आत्मा लेखिका से मिलके अपनी कथा-व्यथा कहती है। मलयाली राघवन लेखिका का सहाध्यायी है। देखने में अत्यंत कुरूप। लेखिकों को छेड़ने की वजह लेखिका का भाई उसका एक दाँत तोड़ता है। कई वर्षों बाद तमिलनाडु एक्सप्रेस में राघवन से मुलाकात होती है। वह बताता है कि अपनी सुन्दर, अभिन्न कुशल पत्नी ' विशालाक्षी ' और प्रवंचक प्रेमी ' अखिलन ' की हत्या के जुर्म में उसे फाँसी की सजा फर्मायी गयी, और ऐसी मृत्यु पाने वाले की आत्मा को कभी शान्ति नहीं मिल सकती। तब लेखिका उसको ढाढस बँधाती है, ' तमसो मा ज्योतिर्गमय... प्रार्थना की याद दिला कर उसी का नाम स्मरण करने के लिए कहती है — ' तोमार जे दोकिसन मुख। '

मद्रास पहुँचने बाद लेखिका को पता चलता है, पन्द्रह वर्ष पूर्व ही राघवन की मृत्यु हुई है।

(५) दादी —

कभी-कभी बुजुर्गों का की सलाह भी माननी पड़ती है। इस तथ्य पर यह कहानी आधारित है। दादी व्यवहारकुशल और अनुभव संपन्न नारी है। छोटी बहु को उनके विचार दकियानुसी लगते हैं। वह खुद को "आधुनिका स्त्री" मान कर खाना पकाने के लिए एक नया नौकर रख लेती है। दादी का नौकर के बारे में अधिक पूछ-ताछ करना भी उसे अच्छा नहीं लगता।

दादी का डर सच होता है। कान्यकुब्ज ब्राह्मण बतलाने वाला वह शख्स पाकिस्तानी जासूस होता है। सब लोग उसकी हत्या पर तुले रहते हैं, तब दादी का रुप "व्रजादपि कठोराणि" से "मृदूनि कुसुमादापि" बन जाती है और वह उसे मौत से बचा लेती है।

जिसे जनरेशन गैप कहते हैं, उसमें पुरानी और नयी पीढ़ी के झगड़े में कभी पुरानी पीढ़ी की जय होती है। ऐसी धर्मपरायणा सहृशील दादी को पोते कहते है — "प्रॉमिस दादी, तुम इस बार भागोगी नहीं ?"

(८) कहानी संग्रह - कृष्णावेणी —

कुल कहानियाँ — ७

(१) कृष्णावेणी (२) प्रतीक्षा (३) लाटी (४) पिटी हुई गोट

(५) दो स्मृतिचिह्न (६) विप्रलब्धा (७) शायद।

(१) कृष्णावेणी —

कृष्णावेणी एक अमीर बाप की इकलौती सन्तान है, जिसे दिव्यदृष्टि का वरदान प्राप्त है। यह तमिल लड़की मलयाली चित्रकार कलाकार भास्करन से प्रेम करती है। भास्करन के पिता को कोढ़ होने से वेणी के पिताजी उनकी शादी को राजी नहीं होते। वेणी इतनी दृढ़निश्चय है कि यदि प्रेमी भी कोढ़ हो तो भी

शादी उसीके साथ करना चाहती है। इस बीच भास्करन और उसके माता-पिता कहीं चले जाते हैं। दो वर्ष बाद हताश वेणी पी.एच.डी.करने विदेश चली जाती है। वहाँ अपनी दिव्य दृष्टि से उसे भास्करन अल्मोडा के कुष्ठाश्रम में बैठा दिखायी देता है। उसी क्षण वह अपना भी भविष्य निश्चित कर लेती है। एक कार ॲक्सिडेंट में आत्महत्या कर लेती है।

कृष्णवेणी से पूरे छत्तीस वर्ष बाद लेखिका की मुलाकात मद्रास में ही होती है। वेणी कहती है कि वह भास्करन के साथ रहती है। दूसरे दिन लेखिका उसके घर उससे मिलने जाती है तो पता चलता है कि बहुत साल पहले वेणी की कार ॲक्सिडेंट में मृत्यु हो गयी है। वेणी की आत्मा लेखिका से मिलने आयी थी। इस लोक में वह प्रेमी को पा न सकी, किन्तु उस लोक में प्रेमी के साथ रह कर उसने अपनी इच्छा पूरी कर ली है।

(२) प्रतीक्षा --

ज्योतिष और हस्तरेखा का पंडित विमल केवल चेहरा पढ कर व्यक्ति को पहचान सकता है, इसका उसे गर्व था। किस तरह उसका गर्व चूर होता है, यह इसकी कहानी है। नायक विमल उच्चकुल का,उच्चपदस्थ,भारद्वाज गोत्रोत्पन्न ब्राह्मण है, ' माधवी ' का चेहरा देख कर भी न सही, बताने पर भी मान नहीं सकता कि इस मातृहीना,सुंदर भोली-भाली लडकी को पागलपन के दौरे की बीमारी है। वह चार महीने पागलखाने में बिता कर भी आयी है। विमल के पिता माधवी से शादी करने मना करते हैं, क्योंकि ' कभी भी मानसिक उत्तेजना ' बिजली से दबाये गए इसके रोग को उभार सकती है ? तब ? इस तब() का सामना विवाह के बाद जल्दी ही विमल को करना पडता है। विमल की बदली ' बरेली ' होने वाली है यह बात सुन कर माधवी पर फिर पागलपन का दौरा पडता है। डॉक्टरी राय के अनुसार - पागलखाने लौटने वाले मरीजों को यही ' एसायलम फोबिया हो जाता है। फुसला कर रोगी को वहाँ लाकर बिजली के दो-तीन झटके से बीमारी को झटक सकते हैं।

विमल माधवी को पागलखाने के प्रतीक्षालय में ले जाता है। वहाँ से बहाना

बना निकल आता है। पागल माधवी कुली लाने गये विमल की प्रतीक्षा में खडी की खडी रहती है। विमल सोच रहा है कि कब माधवी अच्छी हो जायेगी और वचन के अनुसार कुली को लेकर वह पागलखाने के प्रतीक्षालय से छुडाकर उसे अपने घर ले आयेगा ? कुछ पता नहीं ? विमल सच्चा प्रेमी का प्रतीक है।

(३) लाटी --

पति की अनुपस्थिति ससुरालवालों द्वारा पीडित,सोलह साल की नवविवाहिता टी.बी.की शिकार हो जाती है। बीस साल पहले टी.बी.जानलेवा बीमारी थी उसका पति कप्तान जोशी सोलह साल की खिलौने-सी सुन्दरी बानो को छोडकर शादी के तीसरे दिन ही लाम गया है। पति की गैरहाजिरी में ससुरालवाले बानों को सताते है --

" दो साल बाद घर पहुँचा तो दुनिया बदल चुकी थी। उन दो वर्षों में बानों ने सात-सात ननदों के ताने सुने,भतीजों के कपडे धोए,ससुर के होज बिने,पहाड की नुकीली छतों पर पाँच-पाँच सेर उडद पीस कर बडियाँ तोडीं। कभी सुनती उसके पति को जापानियों ने कैद कर लिया है, अब वह कभी नहीं लौटेगा। सास और चचिया सास के व्यंग्य बाण उसे छेद देते, वह घुलती गई और एक दिन क्षय का तक्षक कुंडली मार कर उसकी नन्ही-सी छाती पर बैठ गया। उसे सैनेटोरियम भेज दिया गया था। दूसरे ही दिन कप्तान बानों को, देखने चल दिया तो घरवालों के चेहरे लटक गए।"

भेठिया सैनेटोरियम में कप्तान जोशी बडे यत्न और स्नेह से उसकी सेवा करता है। उसकी सेवा पत्नी को बचा नहीं सकी। बानो को दस्त आने लगते है तब डाक्टर कहते है दो दिन से ज्यादा दिन नहीं बचेगी।

मृत्यु का इन्तजार करने के पूर्व वह अभागी बानो मृत्यु को गले लगाना चाहती है। नदी में डूब कर आत्महत्या करना चाहती है, एक गुरु महाराज उसे बचाते हैं। डूबने से उसकी जीभ कट कर वह 'लाटी' (गूंगी) बन गयी। गुरु महाराज की कृपा से उसका रोग भी ठीक हो जाता है। अलख-अलख करनेवाले वैष्णवियों के दल में वह भी शामिल हो जाती है।

इधर बानो मर गयी ऐसा सोच कर दूसरे वर्ष कप्तान जोशी प्रभा से शादी कर लेते हैं। सोलह साल बाद दोनों नैनिताल आते हैं।

' कुत्सित बूढ़ी अधेड वैष्णावियों के बीच देवांगना-सी सुन्दरी लाटी अपनी दाडिम-सी दंतपंक्ति दिखाकर हँस दी। मेजर का शरीर सुन्न पड गया, स्वस्थ होकर जैसे साक्षात् बानो ही बैठी थी।

पर मेजर (जोशी) जिन्दगी की दौड में बहुत आगे निकल आया था, पीछे लौट कर बिछुडे को लाना सबसे बडी मूर्खता होती। दो जवान बेटे और बेटी राष्ट्रपति के सहभोजों में चमकती उसकी शानदार दूसरी बीवी, गरीब,गूँगी लाटी का आना कैसे सह सकते थे ?'

अपराधिनी की अलख माई (जिसका परिचय हमें अन्त में होगा), ' लाटी की वैष्णावी है। वैष्णावी बनने पर अब पहले वाली बानो नहीं रही। बानो मर गई थी। अब तो वह लाटी थी। परभू अब उसका मालिक और परभू ही उसका सहारा था।'

(४) पिटी हुई गोट --

पुनर्विवाह,अनमेल विवाह, दिवाली के दिन जुआ खेलने की सामाजिक कुप्रथा, आदि अनेक समस्याओं से भरी शिवानी जी की उत्कृष्ट कहानियों में से एक कहानी है।

कहानी की नायिका है सौम्य, शन्त स्वभाव की पंद्रह वर्ष की बालिका, सत युग की सती ' चन्दो '। उसके अनाथ होते ही उसके ताऊ साठ वर्ष के तिहेजु गुरुदास की (तीसरी) पत्नी के रुप में ब्याह देते है। बूढ़ी दादी और पतिपरायणा माता से पतिभक्ति का उपदेश उसने सुने थे, इसलिए संस्कारशील पतिव्रता है।

दूसरा कारण यह है कि जिसे जीवन के पन्द्रह वर्षों में मिठाई तो दूर, भरपेट अन्न भी न जुटा हो, उसके लिए नित्य जलेबी का दोना पकडाने वाला पति परमेश्वर नहीं,तो और क्या होता।'

नायक गुरुदास तिरसठ वर्ष की उम्र में एक बार भी जुआ नहीं खेला था, किन्तु दिवाली के दिन भानजे के बहकावे में आकर जुआ खेलने जाता है और जिंदगी की कमाई के आठ हजार और अपनी दुकान हार जाता है। कामी जुआरी महिम भट्ट के उकसाने पर पत्नी को भी दाँव पर लगाने के लिए तैयार हो जाता है।

' सरल - निष्कपट चित्त के दर्पण में संसार की कलुषित - फरेबी चालें कितनी स्पष्ट होकर निखर आती हैं। चन्दो पलक मारते ही सब समझ गई। आधी रात को उसका पति महिम भट्ट के यहाँ दाँव पर लगाने के लिए ही ले जा रहा है। ' असहाय, अशिक्षित, पतिपरायणा चन्दो पति के साथ जाती है -

' उन दोनों विवेक भ्रष्ट जुआरियों के बीच, काँपती-थरथराती चन्दो - कुमाऊँ की सरला पतिव्रता किशोरी, जिसके लिए पति की आज्ञा कानून की अमिट रेखा थी, जो पति की आदेशपूर्ण वाणी को ब्रह्मवाक्य समझ कर ग्रहण करने को सदा तत्पर थी। '

दाँव पर गुरुदास अपनी पत्नी चन्दो को हार जाता है। वादे के अनुसार महिम भट्ट चन्दो के जीवन की प्रत्येक रात्रि का अधिकारी बन जाता है। गुरुदास अपनी पत्नी को रखैल बनी देख आत्महत्या कर लेता है।

(५) दो स्मृतिचिह्न —

सन्तान हीनता की मुख्य समस्या को उजागर करने वाली इस कहानी की दुय्यम समस्या है अन्तर्जातीय प्रेम विवाह।

सुशिक्षित, फर्राटे से अंग्रेजी बोलनेवाली बिन्दु अंतर्जातीय प्रेम विवाह कर मायकेवालों की तुलना में उच्च स्तर की बन जाती है। शादी के बाद आठ साल तक बाबूजी, माँ और पाँचो बहनों ने उसे दूध की मक्खी-सी समझ दूर फेंक दिया।

उसकी लाडली बहन इन्दु ' की शादी में माँ उसे बुलाना चाहती थी किन्तु पिताजी ने कहा — ' खबरदार, जो उस कुलबोरनी को बुलाया। हमारे लिए तो वह मर खप गई। ब्राह्मण की बेटी बनिए की बहू बनने गई तो कहो, वहीं बनी रहे।

बिन्दु को देवेश जैसा संपन्न पति अपने समाज में नहीं मिल सकता। इस सुख में सन्तान हीनता का दु:ख उसे काँटे की तरह चुभता है। इन्दु से मिलने स्टेशन पर जाती है, तब साधारण सी क्लर्क की पत्नी, सुखी संसार और पति-पुत्र में डूबी इन्दु तृप्त दिखाई देती है। उसके पति देवेश के कोट पर इन्दु के नन्हे पुत्र ` सुरेश ` की दो नन्ही हथेलियों का चॉक्लेट छप्पा वह स्मृतिचिह्न के रूप में रख लेती है।

वंध्या बिन्दु अक्सर सपने में देखा करती थी कि कोई उस के द्वार पर शिशु को रख गया है। एक दिन सुबह सचमुच का शिशु देख कर वह उसे अन्दर लेती है, उसे लगता है ईश्वर ने मेरी गोद भर दी। तब तक उसकी माँ, (बिंदू की पड़ोसन) आकर उसे ले जाती है। इस दूसरे ` सुरेश ` ने कीमती विदेशी रग गीला किया था, वह भी बिन्दु के लिए स्मृतिचिह्न बन जाता है।

यह है दो स्मृतिचिह्नों की कथा।

(६) विप्रलब्धा —

काव्यशास्त्र के नायिका भेदों में ` विप्रलब्धा ` नायिका उसे कहते हैं जिस नायिका का प्रेमी या पति वादा करने पर भी वापस नहीं आता, ऐसी विरहपीड़ित नायिका को ` विप्रलब्धा ` कहते हैं। आधुनिक साहित्य में उसे असफल नायिका कह सकते हैं।

आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई इस कहानी की नायिका निम्मी उर्फ निर्मला की सगाई सुरेश ह होती है। चूँकि सुरेश अभी पढ़ रहा है, अत: एक साल के बाद विवाह संपन्न होनेवाला है। सुरेश के पिता दुर्गादत्त का सम्मिलित परिवार अपने आदर्श-प्रेम के लिए प्रसिध्द था। उनके बड़े भाई की मृत्यु के कारण विवाह एक साल के लिए टल जाता है। दूसरे वर्ष निम्मी के मझले चचिया ससुर चल बसे, छठे महीने तीसरे ससुर और फिर तीसरे वर्ष स्वयं दुर्गादत्त जी। इस तरह तीन-चार वर्ष बीत जाते हैं।

अन्त में विवाह की तिथि निश्चित कराने के लिए सुरेश जब एक नम्रतापूर्ण पत्र भेजता है तब तीखे, भड़कीले स्वभाव की निम्मी का उत्तर आता है — ` अबके, अपने घर-भर के बड़े-बूढ़ों की डाक्टरी जाँच करा लेना, तब तिथि निश्चित करना।

कहीं ऐसा न हो कि फिर मुहूर्त टल जाए।`

इस उत्तर से मानो निम्मी की अल्पबुध्दि ने स्वयं ही अपने सौभाग्य की अर्थी निकाल दी। सुरेश अपने चाचा से कह देता है कि ` वह गाँव की अनपढ़ कन्या भले ही ले आए, पर अब उस घमण्डी लड़की से रिश्ता नहीं करेगा - जिसने उसके मृत-गुरुजनों का अपमान किया था।`

इस घटना को २४ वर्ष हो जाते हैं। निम्मी अपने मामा की पुत्री की शादी के लिए पहाड़ आ रही है, तब लेखिका संयोगवश उसे मिलती है। वह निम्मी को बताती है कि मामा की पुत्री का विवाह सुरेश के लड़के से हो रहा है।

निम्मी पर मानो वज्रपात होता है। निम्मी अपनी सगाई की अंगूठी उतार कर अपनी सहेली को वह सुरेश को देने के लिए देकर कहती है -- ` आज तक जिसके लिए मूर्खतावश इसे पहनती रही वह मेरे अज्ञान से अन्धी कल्पना दृष्टि में अभी भी मेरे लिए कुंआरा बैठा था। आज अचानक वही अपने बेटे की बारात सजाकर चल दिया तो अब किसके लिए पहनूं ?

(७) शायद

यह भी आत्म कथात्मक कहानी है। इसमें भी लेखिका की सहेली ` कुसुम ` की कथा है। ` कुसुम पाण्डे ` की मौसी का देवर ` तारी ` कुसुम से ही विवाह करने का अन्यथा कुंआरा रहने का प्रण करता है। कुसुम के पिता इस विवाह के विरोधी है। तारी को टी.बी.हो गया, उसे अल्मोड़ा के ही सैनिटोरियम में रखा जाता है। (नैनिताल) वहीं रहने वाली कुसुम उसे मिलकर आती है। बाद में तारी को उसके मौसा लाहौर में पीर से इलाज करवाने ले जाते है।

कुसुम की शादी एक युवक नौजवान से की जाती है, किन्तु वह छह महीने के अन्दर टी.बी.से गुजर जाता है। अठारह वर्ष की आयुमेंकुसुम को वैधव्य के नाग ने डसा। इस घटना के पच्चीस वर्ष बाद भी अध्यापिका बनी कुसुम की गणना कुमाऊं की सर्व श्रेष्ठ सुंदरियों में की जाती है। वह अपना एकाकी जीवन संन्यस्त वृत्ति से गुजार रही है।

नैनिताल से दिल्ली जाते समय लेखिका को तारी मिल जाता है, जो सद्य: विवाहित है, अपनी कुरुप पत्नी के साथ हनीमून मना कर दिल्ली जा रहा है। लेखिका से मिलने आयी कुसुम के दर्शन से वह विचलित हो उठता है। उसके बारे में पूछताछ करने लगता है। पत्नी के सामने वह खुले आम पूँछ नहीं सकता, लेकिन उसकी विवश मूक-दृष्टि से लेखिका को लगता है - `इन्तजार तो मैं अब भी कर रही हूँ, शायद वह कभी मुझसे अपने खोए प्रिय मित्र का अता-पता पूछने फिर लौट आए- शायद ?`

(९) कहानी संग्रह - चिर स्वयंवरा

कुल कहानियाँ - १५

(१) चिर स्वयंवरा (२) मास्टरनी (३) धुआँ (४) गूंगा (५)लाल हवेली
(६) शिबी (७) नथ (८) गहरी नींद (९) खुदा हाफिज
(१०) ठाकुर का बेटा (११) बिन्नू (१२) तुई जे पुरुष मानुष रे
(१३) कीर्ति स्तंभ (१४) आपबीती (१५) एक अनाघ्रात पुष्प।

(१) चिर स्वयंवरा --

शीर्षक कथा में रजनी दी के विचित्र रोमांस की करुण कहानी है। पचास साल की प्राध्यापिका रजनी दी लेखिका की दूर की रिस्तेदार होने पर भी उनका हृदय का रिस्ता निकट का था। बचपन से लेखिका के उनका शांत स्वभाव, सौम्यता, पांडित्य प्रभावित करता आया था। इस रजनी दी को लेखिका ने नया डेंचर बनवा दिया, जिससे रजनी दी के लिए मानो असमय वसंतागमन आ गया -जिसने उनका बहुत बडा सर्वनाश कर दिया। फिर भुवाली जाने पर डा.प्रद्युम्न मेहता से उनकी मुलाकात हुई। रजनी दी के नकली दाँतों और कलप किये बालों की असलियत से बेखबर उसी पर मोहित होकर उन्हें प्रेम करने लगता है। जिंदगी में कभी न झूठ बोलने वाली रजनी दी प्रेम में अंधी होकर बहक जाती है। वह उसे ही नहीं, स्वयं अपने को भी छलने लगती है। उसे लगता है -`मेरा अद्भुत प्रेमी मुझे एक बार फिर यौवन के उस विस्मृत प्रासाद में खींच ले गया जहाँ वर्षों

तक रहने पर भी मैं अंधी बनी उसके एक से एक मनोहर कक्ष, गवाक्ष आज तक नहीं देख पाई थी।'

दोनों ने विवाह करने का निर्णय लिया। तभी एक घटना ऐसी घटी जिसने रजनी दी के नकली दाँतों का भाँडा फोड दिया। डाक्टर उसका असली रुप देख कर स्तंभित रह जाता है।

लेखिका रजनी दी के लिए जो सोहाग पिटारी ले गयी थी, उसे वापस लाती है। उनकी यह सोहाग पिटारी भी जीवन के उस हादसे को अंकित करती है,जो अंत तक उनसे चिपटा रहा।

प्रौढ कुमारिकाओं की समस्या, 'मन के प्रहरी' के अनुराधा पटेल में और रजनी दी की समस्या समान है। रजनी दी के माध्यम से बताया है कि संयम के नाम पर दबायी गयी यौवन भावना से बचना असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य है। उसके उमडने पर मनुष्य को किसी सहारे की तीव्र आवश्यकता महसूस करता है, इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को उजागर करने वाली यह कहानी है।

(२) मास्टरनी —

अंतर्जातीय विवाह, तथा दहेज की सामाजिक समस्या पर आधारित यह कहानी है। कहानी की नायिका है 'राजेश्वरी उर्फ राजी उर्फ मास्टरनी' एक पहाडी राजपूतनी सुन्दरी सुघड गृहिणी अदभुत नारी। वहाँ पर आए डॉ. सुबोध जोशी के प्रेमापाश में बँध कर विवेक भ्रष्ट होकर उसे अपना सर्वस्व अर्पण करती है। डॉ.सुबोध के महत्वाकांक्षी पिता ने अपने बडे आए.पी.एस. लडके का विवाह कुमाऊं के सबसे समृध्द परिवार में कर अब छोटे लडके के लिए भी उस समधि की रिस्तेदार, साधारण-सी लडकी से तय किया है। सुबोध को भी यह पसंद है फिर यथार्थ से आँखें फेर कर गाँव में मास्टरनी के साथ प्रेम का नाटक करता है। तभी उसके पिता का पत्र आता है कि दशहरे को उसके टीके का मुहूर्त निकला है।

सुरेश दुविधा में पड जाता है। 'पिता के पत्र ने उसकी छाती में गोली-सी दाग दी। राजेश्वरी से विवाह की बात वह जबान पर नहीं ला सकता था। आज तक कुमाऊं के इतिहास में किसी ब्राह्मण-पुत्र ने क्षत्रिय-कन्या से विवाह करने का

दुस्साहस नहीं किया था। अपने चित्त की दुर्बलता पहचान लेना मनुष्य के लिए सबसे बडा अभिशाप है।`

पिता की महत्वाकांक्षा,अपनी विवशता और मामी की बहन से रिश्ता इनके कारण वह मास्टरनी को सत्य बता कर चला जाता है -- ` सहसा सुबोध को देख कर उसे ( मास्टरनी को ) साँप सूंघ गया। नारी को विधाता ने अलौकिक सूक्ष्म दृष्टि दी है। किसी अनिष्ट को वह पशु की-सी तीव्र घ्राणशक्ति से सूंघ कर स्वयं ही अनमनी हो जाती है।`

सुरेश विवाह के एक वर्ष बाद नैनिताल जा रहा है। उसी बस में मास्टरनी को देखता है, माँ कीमृत्यु से वह अकेली है। उससे छुप-कर वह बस से उतर जाता है। डाक्टर की बेह्याई बेवफाई का सदमा मास्टरनी के दिल की गहराई तक डूबा देखता है।

(३) धुआँ --

एक वेश्या की असफल प्रेम कहानी। कुमाऊँ का प्रसिध्द सौन्दर्य तीर्थ, रामगढ की देवांगना-सी सुंदरी उर्वशियाँ शरीर को लगन और भक्ति से बेचती थीं। उनमें सबसे सुन्दर वेश्या की ` मोतिया ` की पुत्री ` रसूला ` है, जो उनकी परंपरा कायम रखने के लिए ही पैदा हुई है। संगीत में उसकी असामान्य प्रतिभा देख कर अच्छी तालीम दिलाने के हेतु से लखनऊ,बेनजीर के यहाँ उसे भेजा दिया जाता है।

सोलह वर्ष की रसूला को गाने के साथ उसके परंपरागत पेशे की भी तालीम दी जाती है। वह स्वर्ग की कोई स्वप्न-सुंदरी अप्सरा जैसी दिखने लगती है। इस कच्ची वयस में वह बेनजीर की सख्त नजरों से बच कर पडोसी मारवाडी के विवाहित लडके से प्रेम करने लगती है। वह भी रसूला के प्रेम में दिवाना बन कर उसकी खिडकी को फाँद कर रसूला के कमरे आता रहता है। तीन महीने के बाद सेठ की छलांग खिडकी से फिसल कर वह चौमंजिले से पथरीली सडक पर गिर कर मर जाता है।

बेनजीर रसूला जैसे कोहिनूर हीरे को खोना नहीं चाहती, अतः उसे कमरे

में बंद करके रखती है। रज्जुला `छोटे सेठ` के प्रेम को भूल नहीं सकती, वहाँ से भाग कर नेपाली बाबा के आश्रम में जाकर अपनी तीन मौसियों के साथ गोरख पंथ की दीक्षा लेती है। उसकी मौसियाँ जानती है, रज्जुला ने गाना किस के लिए छोड दिया है -- `भोले बाबा से वह कैसे कहे कि इस धूनी को फूँक-फाँक कर तो वह धुआँ मिटा देगी, पर जो उस छोकरी के हृदय में निरन्तर एक धूनी धधक रही है, उसका धुआँ भी क्या वह फूँक मार कर हटा सकेगी ?`

`धुआँ` की यह `रज्जुला` `लाटी` की बानो तथा `अलख माई` की `वैष्णवी` `माई` पर आधारित है।

(४) गूँगा --

इसकी मुख्य समस्या है अवैध मातृत्व अनाथ सन्तान तथा अन्तर्जातीय विवाह। कहानी की नायिका कृष्णा मातृहीना अठारह वर्ष की पढीलिखी, संगीत और नृत्य में प्रवीण एक सर्जन की पुत्री है। प्रगतिशील विचारों के होकर भी घोर सनातनी पिता उसके लिए पहाड-से एक हीरे-सा टुकडा वर ढूँढ निकालते हैं। कृष्णा ईसाई स्क्वैड्रन लीडर विकी डिसूजा से प्रेम करती है। पिता की पाबन्दियों के बावजूद दोनों छुपके से(गांधर्व विवाह की तरह या) पादरी के सम्मुख चर्च में विवाह कर लेते हैं कृष्णा तीन मास की गर्भवती है, तब डिसूझा की अपघात में मृत्यु हो जाती है। पिता के आदेशानुसार कृष्णा दिल्ली में सतमासी पुत्र को जन्म देकर, एक अनाथाश्रम में रख कर वापस आती है। फिर उसका विवाह होता है। उसके एक पाँच वर्ष का पुत्र भी है। कृष्णा ओडिसी और भरतनाट्यम् की प्रसिध्द नर्तिका बन गई है। पति अमरिका में सेक्रेटरी का पद सँभालने के लिए जा रहा है। कृष्णा भी महारानी के स्वागत-समारोह में अपनी नृत्य-कला दिखा कर जाने के लिए पति-पुत्र के साथ दिल्ली आयी है। विदेश जाने से पहले आश्रम को देखते ही उसका पुराना घाव नासूर बन जाता है।

वह उस अभागी बच्चे को मिलने के लिए जाती है। उसे मिलने पर उसे पता चलता है कि गूँगा है। फटे, मैले कपडे पहने; संचालिका और दाई के निर्मम, कठोर

व्यवहार पर भी वह जिद्दी संयमी दृष्टि और वैरागी मुस्कान – छोटा डिब्बा लगता था। हृदय पर पत्थर रख कर विदेश चली जाती है।

विदेश में गूंगे बहरे बच्चों की संस्था के लिए वह अपना नृत्य प्रस्तुत करती है। उन बच्चों के देखते ही उसकी आँखों आँसू उमड पड़ते हैं —

' बेचारी मदर क्या जानती कि वे आँसू केवल उस विदेशी गूंगे बालक के लिए ही नहीं थे। वे उसके लिए भी थे जो अपनी दुबली कलाइयों से, खिड़की की सलाखों को जकड़े ही सो रहा था। .... वह कितना कुछ पूछना चाहता है – मेरी रेल क्यों छीन ली ? इतने मेहमान आते हैं, पर वह क्यों नहीं आती जिसने मुझे चूम-चूम कर खिलौने दिये थे ? '

(५) <u>लाल हवेली</u> —

शिवानी की कहानियों में यह भारत – पाकिस्तान के विभाजन के समय जो जातीय तणाव उत्पन्न हुआ, उसकी शिकार बनी नारी की एक अलग प्रकार की समस्या को चित्रित करनेवाली कहानी है। इस संग्रह की भी अनूठी कहानी है।

पाकिस्तान के बँटवारेमेंकितने लोग पीसे गए उनमें सोलह वर्ष की विवाहिता सुधा जो एक विवाह के लिए मुल्तान गई थी, उसमें फँस गयी। दंगे की ज्वाला ने सबसे पहले बेसहारा नारियों को फूंक दिया। मुस्लिम गुंडों की भीड जब भूखे कुत्तों की भाँति उसे बोटी-सी निचोडने को थी, तब रहमान अली फरिस्ता बन कर आया। विवाहिता हिन्दू सुधा जान बचा पायी, किन्तु उसने रहमान अली की पत्नी ' ताहिरा ' बन कर उसके एहसान चुकाए।

पन्द्रह साल बाद ताहिरा पति के रिस्तेदार की शादी के लिए उसी गाँव आती है। उनके पडोस में ही है उसके वकील श्वसुर और पति की ' लाल हवेली '। पन्द्रह सालों में भी एक क्षणके लिए पहले संस्कार, यादें वह भुला नहीं पायी थी, ' लाल हवेली ' को देखते ही उसका हृदय उसे धिक्कारने लगता है — ' तू ने अपना गला क्यों नहीं घोट दिया ? तू मर क्यों नहीं गई, कुएँ में कूद कर ? क्या पाकिस्तान के सब कुएँ सूख गए थे ? तूने धर्म छोडा पर संस्कार रह गए, प्रेम की धारा

मोड़ दी, पर बेड़ी नहीं कटी, हर तीज, होली, दिवाली तेरे कलेजे पर माला भोंक कर निकल जाती है। हर ईद तुझे खुशी से क्यों नहीं मर देती ? आज सामने तेरे ससुराल की हवेली है, जा उनके चरणों में गिर कर अपने पाप धो ले।

भगवान जब देता है, तो छप्पर फाड़कर देता है की उक्ति ताहिरा पर यथार्थ रूप से लागू होती है। जिस भगवान ने उसके पति से उसे अलग किया उसीने रहमान अली जैसा पति और एक बेटी दे दी है।

ताहिरा को अब मालूम होता है कि उसके पूर्व पति ने बीवी के दंगे के मर जाने पर फिर घर नहीं बसाया। सुधा आज ताहिरा के लिए प्यारे हिन्दुस्तान की आखिरी सांझ है, उसे लगता है — ' जिस देवता ने उसके लिए सर्वस्व त्याग कर वैरागी का वेश धर लिया है, क्या एक बार भी उसके दर्शन नहीं मिलेंगे ?

अन्त में महादेव की मनौती मांग कर छुपके से लाल हवेली में आकर खिड़की से पति के दर्शन कर वापस आ जाती है।

(६) शिबी —

कुमायूँ के वेश्या-जीवन पर आधारित यह इस संग्रह की दूसरी कहानी है। इसमें भी वेश्याओं की सन्तान की समस्या है। ' धुआँ ' की नायिका रजुला अभिजातकमीय नाचने-गाने वाली वेश्या है, तो ' शिबी ' शरीर बेचने वाली आम वेश्याओं की तरह है।

' शिबी ' का नाम था ' शिवप्रिया ' वेश्या की पुत्री को अनाथ होने पर संगीत-नृत्य में प्रवीण मौसी ने दस साल की शिक्षा से शिबी के दिमाग को इस तरह घिस मांज कर परिष्कृत किया कि शिबी उतनी सुन्दर न होने पर भी साधारण मानसी के स्तर से बहुत ऊपर उठ गई।

शिबी के चाहने वालों में एक आध नेता गण, समृध्द बांके, ईसाई जुड़वाँ भाइ डेविड और हेनरी, ठेकेदार, कपड़े का दूकानदार, ड्रेसमेकर, सुनार, धोबी इनके अलावा

साहित्यिक,राजनीतिज्ञ, सर्जन तथा तरुण छात्र भी थे। वह कुमाऊं की मिस कीलर प्राचीन युग की मेनका थी।

शिबी इन सब में एक ही प्रेमी की वास्तविक प्रेमिका थी, वह था धरणीधर (डिकी)। पिता के अटूट वैभव का एक मात्र उत्तराधिकारी डिकी शिबी के साथ रासलीला मनाने में दंग है। व पिता ने ब्राह्मण पुत्र होने से कुल की मर्यादा का स्मरण दिया पर वह नहीं मानता। तब रुद्रदेव ने गुंडों की सहायता से शिबी को नेपाल भगा दिया। और अपने पुत्र की एक उद्योगपति के लडकी से शादी कर दी।

कुछ दिनों बाद अल्मोडे के कुष्ठाश्रम के नये महिला वॉर्ड का उद्घाटन करने रुद्रदेव गाए। वहाँ पर कुष्ठ रोग की शिकार बनी शिबी को देखते है। उसके साथ एक देवकन्या-सी बालिका खडी थी। उसकी नीलाभ आँखे देख कर रुद्रदेव को कहीं भी संशय के लिए स्थान नहीं रहा। क्योंकि उनके खानदान की नीली आँखे, पिछली चार पुश्तों से अपनी मर्यादा निभा रही थीं।

(७) नथ --

यह कहानी एक लमानी स्त्री की निस्वार्थता को चित्रित करती है। कथा-नायिका पुट्टी तिब्बती लमानी है, जो माँ के साथ निर्वासित बन कर आती है। फौजी गुमान सिंह माता,भाई,भौजाई और विधवा बहिन से लोहा लेकर उसे ब्याह घर लाता है। पुट्टी के सात्विक सौन्दर्य ने धर्म,जाति और रुढियों की उलझी गाँठे क्षण भर में सुलझाकर रख दी।

सास और ननद पुट्टी के साथ बातें नहीं करते। थोडे ही दिनों में गुमान सिंह चीनियों के साथ युद्ध करने जाता है। जाने से पहले गुमान उसे एक सोने की नथ देकर जाता है। पुट्टी की नथ पहनने की इच्छा तो पूरी हुई किन्तु इसे देखने वाला कोई नहीं। एक दिन गुमानसिंह की मृत्यु की खबर आती है। सास,ननद उसके लिए जीना मुश्किल कर देते है, फिर भी पुट्टी घर छोड कर नहीं जाती,क्योंकि गुमान सिंह की सहस्त्र स्मृतियाँ उसी घर में थीं।

एक दिन जब सोना जमा कर के देश के लिए गोलियाँ बारुद खरीदने के

लिए कमिश्नर साब आते हैं, तब पुट्टी मिट्टी के नीचे छिपाई छह तोले की नथ देकर आती है।

पुट्टी का यह सात्विक दान,अपने पति को मारने वाले चीनियों से बदला लेने के लिए किया गया है।

(८) गहरी नींद —

` गहरी नींद ` कहानी शिवानी की बहुचर्चित कहानियों में ऊँचा स्थान रखती है। कहानी का आरंभ ` होम फार फालन उमेन ` की अध्यक्षा रवीन्द्र पण्डित की तीसरी पत्नी उमा यादव की जा रही अर्थी से होता है। तदनन्तर अख्तरी का,उमा यादव और आश्रम की अन्य अपराधिनियों का विवरणात्मक परिचय मिलता है। अख्तरी के जुर्म वट की शाखाओं की भाँति संपूर्ण उत्तर भारत में फैले हैं। कोई न कोई पुलिस अधिकारी अख्तरी के जुर्मों के कारण ` होम फार फालन वुमेन वीमैन ` में आता ही रहता है। ऐसे ही एक बार कश्मीरी पण्डित डिप्टी पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट रवीन्द्र आता है और उमा यादव के सौन्दर्य से आकर्षित हो कर उसे फँसाने के लिए उसके चारों ओर अपनी कूट नीति का जाल बिछा देता है। अन्ततः वह उमा यादव से विवाह कर लेता है। अख्तरी जिद करके उसके पास रहने लगती है, और एक बार उमा की अनुपस्थिति में रवीन्द्र पण्डित की समशायनी बन जाती है। उमा यादव यह देख लेती है। अख्तरी रवीन्द्र पण्डित को शरीर की रिश्वत देकर पुनः निर्द्वन्द्व भाव से गाँजे - चरस का धंधा करने लगती है, जब कि उमा यादव नींद की गोलियाँ खाकर सदा के लिए सो जाती है।

इस कहानी के संदर्भ में शिवानी लिखती है —` गहरी नींद ` मैं ने गाजीपुर में लिखी थी, जहाँ मेरे बड़े भाई एस.पी. थे। वहाँ विस्थापित स्त्रियों के केन्द्र की संचालिका ` मिल खान ` मेरी मित्र थी। उन्होंने मुझे आश्रम की अपराधिनियों से मिलाया था। वहीं मुझे यह नायिका मिली थी। साँवले रंग की वह सलौनी सूरत जहाँ चेहरे - मोहरे से एकदम भोली लगती थी, जहाँ जीवन कुछ और ही इतिहास बताता था। कहानी एकदम सच्ची नहीं थी। पर रवीन्द्र पण्डित भी एकदम ही कोरी कल्पना की उपज नहीं था। .... ऐसे ही एक सुदर्शन पुलिस अफसर था जिसकी पत्नी अत्यंत सुन्दरी थी, मेरी मित्र थी। लगभग इसी प्रकार

का दुर्भाग्य (वह जेल से छूटी थी) उसने सुधारने अपने यहाँ रखा था वह एक दिन उसकी अनुपस्थिति में उसे ही डस गई। नींद की गोलियाँ खाकर ही उसने (स्वामिनी ने) अपना जीवन स्वयं ही नष्ट कर दिया - अन्तर इतना ही था कि वह अभागिन मरी नहीं, बच गई।"

कहानी के सभी पात्र अख्तरी, उमा यादव और रवीन्द्र पण्डित अपने रूप-सौन्दर्य में विलक्षण है। अख्तरी का सौन्दर्य मेनका-सा है, वह माली से लेकर खद्दरधारी ऋषि-मुनियों का मन भी डुला देती है किन्तु उसका सौन्दर्य मात्र शारीरिक है। उमा यादव का यौवन बीत चुका है, किन्तु अब भी वह सुन्दरी है जैसे उजड जाने पर भी दिल्ली ही थी। रवीन्द्र पण्डित भी सुदर्शन पुरुष है उसका पौरुष खूंखार और कुटिल है।

यह कहानी भ्रष्टाचार के अनेक स्तरों का पर्दाफाश करती है। यह भ्रष्टाचार कही रिश्वत के स्तर का है कही सेक्स के स्तर का है और कहीं काला-बाजार के स्तर का है। रिश्वत के स्तर का भ्रष्टाचार रवीन्द्र पण्डित और उसकी दूसरी पत्नी के रूप में देखा जा सकता है। उसकी दूसरी पत्नी का वर्णन प्रतिशोध की नायिका " सौदामिनी " से मिलता जुलता है। सेक्स के स्तर का भ्रष्टाचार भी अनेक रूपों में है - एक भ्रष्टाचार रवीन्द्र पण्डित की अदम्य यौन वासना का है। उसे एक के बाद पश्चात दूसरी और तीसरी पत्नी बासी लगने लगती है। दूसरा भ्रष्टाचार अख्तरी की असंख्य प्रेमियों के बीच रहने की वृत्ति में है।

तीसरा भ्रष्टाचार काला बाजार के स्तर का है। अफीम-गांजे का काला-बाजार रवीन्द्र पण्डित जैसे रिश्वत और भ्रष्ट अधिकारियों की छाया में पनपता है।

उमा यादव के प्रसंग में शिवानी जी ने विवाह-समस्या का अंकन किया है। उमा यादव की मृत्यु का कारण बताया जाता है, वहाँ कहानी विकास को छूती है। रवीन्द्र पण्डित को शरीर की रिश्वत देने के पश्चात अख्तरी द्वारा निश्चित होकर अफीम, गांजे, चरस का व्यापार करना कहानी का चरम है। अन्त में उपसंहार जोडा गया है --

` विचित्र शिल्पी विधाता भी कैसी कैसी अनोखी मूर्तियाँ गढ देता है। एक को नींद के लिए शीशी भर गोलियाँ खानी पड़ती है और दूसरी बिना गोली खाये ही गहरी नींद में डूब जाती है। `

(९) खुदा हाफिज --

` मुमताज ` नामक एक स्त्री की कहानी है। लम्बी बीमारी में उसकी मृत्यु हुई। उसके शौहर ने तीसरे महीने में दूसरी शादी कर ली। मुमताज की अतृप्त आत्मा शौहर के लिए तड़प रही है। केवल लेखिका को वह दिखाई देती है। लेखिका उसके बारे में किसी से कह नहीं सकती क्योंकि विज्ञान के इस युग में भला ऐसी घटना कोई विश्वास करेगा। मुमताज की आत्मा आकर उससे कहती है -- ` किसी के चले जाने से दुनिया नहीं रुकती। अच्छा, खुदा हाफिज। `

(१०) ठाकुर का बेटा --

यह नायक प्रधान कहानी है। ज्योतिषी कुंडली में ठाकुर ह्यातसिंह को पुत्रयोग देखते हैं। राधा रुक्मिणी की तरह दो पतिव्रता पत्नियों से उनकी चार लड़कियाँ थीं, उनके बेटे भी हो गये थे, किन्तु ह्यातसिंह सोचते हैं ` पितरों के प्रति भी उनका कर्तव्य है -- कुमाऊं के राजपूत के लिए पुत्र के बिना निरवंसिया जीने से मौत भली है, मन पक्का कर उन्हें विवाह करना ही होगा। `

वे सौन्दर्यवती, विमाता के छल से त्रस्त हंसा को ब्याह लाते हैं। विवाह को वर्ष-भर होते ही हंसा पेट से रहती है, तब दोनों सौतें भी उससे स्नेह करने लगती हैं। ह्यातसिंह खेतों में जंगली हाथियों के उत्पात को शांत करने के लिए गये होते हैं। तभी ` ह्यातकोट ` के दुर्ग की दीवार को फांदकर एक महादानव जैसा जंगली भालू आकर खड़ा होता है। कहते हैं -- कुमाऊँ का जंगली भालू, नासिका-लोलुप ही नहीं, नारी लोलुप भी होता है। भालू तीनों के रूप-यौवन को परख कर हंसा को उठाकर ले जाता है।

ऐसी अनहोनी घटना कुमायूँ के इतिहास में कभी नहीं घटी थी। ठाकुर ख्यातसिंह ने कुमायूँ के जंगल छनवा दिये, किंतु हंसा कहीं नहीं मिली।

दस वर्ष बीत गये। ख्यातसिंह ने सब शौक त्याग दिये। अब भी वे अपनी सुन्दरी पत्नी की स्मृति को भुला नहीं पाये थे। गुमानसिंह ठाकुर से वयस में बहुत छोटा-था, हंसा से उसके विवाह का प्रसंग भी चला था, तभी ख्यातसिंह ने झापट्टा मार कर उस हीरे को उठा लिया था। फिर भी दोनों अंतरंग मित्र थे। वह आकर ख्यातसिंह को बताता है कि भालू द्वारा हरण किये जाने पर जंगल में हंसा की लाश मुझे मिली थी, मैंने उसकी चिता रचा दी थी। आज मैंने जंगल में भयानक भालू के पीछे पीछे चार हाथ पैर टेकता राजकुमार - सा नौ-दस साल का बच्चा देखा। वह तुम्हारा ही बेटा है।`

दोनों बंदूक लेकर जंगल में जाते हैं। सुबह लोग को देखते हैं कि गुमान सिंह और ख्यातसिंह की क्षत-विक्षत देह और उनकी भालू द्वारा तोड़ी-मरोड़ी बंदूकें। गुमान सिंह मर गया है, ख्यातसिंह मृत्यु के पूर्व इतना ही कहता है ---

` ठीक कह रहा था गुमान - ठाकुर का बेटा है, ठाकुर का।`

सत्य कथात्मक संस्मरण --

(११) बिन्नू --

अभिशप्त बिन्नू दसवें वर्ष को ससुराल गयी फिर सास की मार से बचने मायके भाग आयी। वह लेखिका की सहेली थी। उसने कसम खायी थी कि सास की मृत्यु के बाद ही ससुराल जायेगी। नाच-गाने के लिए उसे आमंत्रित किया जाता था। अपने अपमान का बदला वह संसार भर के मर्दों से लेना चाहती है। इसलिए लोग उसके बारे में अच्छा नहीं बोलते। बाद में लेखिका की भी शादी हो जाती है। तीस वर्ष पश्चात फिर बिन्नू से उसकी मुलाकात होती है। दस साल पहले सास की मृत्यु के बाद वह पति के साथ घर बसा कर रह रही है। अपने पाप धोने के लिए वह चारों धाम की यात्रा कर आयी है, एक धरमशाला बनवा दी है, सब गहने बेच शिवालय में लगा दिए, इस तरह उसकी प्रतिशोध की भावना पश्चाताप में बदल गई है।

(१२) तुई जे पुरुष मानुष्य रे —

यह लेखिका शान्तिनिकेतन में पढ रही थी, वहाँ आश्रम के शिशुभवन का छात्र, लेखिका की सहेली का भाई, मातृहीन ध्रुवा-कुंद का संस्मरण है। इस दस बारह साल के बालक का संस्मरण है, बहुत ही शर्मिला, शांत बालक था, किसीसे भी झगडता नहीं था। अंधेरे में अकेले जाते समय डरता है, तब मजाक से लेखिका कहती है - ' ना, जा भय किसेर, तुई जे पुरुष मानुष। ' तो सचमुच वह नन्हा सचमुच ' पुरुष मानुष ' बन कर चला जाता है।

फिर छुट्टियों में लेखिको को समाचार मिलता है नन्हा ध्रुव कुंद हाथ में तिरंगा लिए जुलूस के मुखिया बना जा रहा था, तब पोलिस की गोली लगने से शहीद बन गया। बालिश्त भर की छाती फुलाए क्या वह सचमुच ही ' पुरुष मानुष ' नही बना क्या। '

(१३) कीर्ति स्तंभ —

देश की स्वतंत्रता के लिए ध्रुव कुंद्ध कैसे बालक शहीद हुए, तब ' तिलका ' जैसी वेश्याओं ने उसमें अपना साथ दिया। अनाथ तिलका को ' बूबू ' ने पाला है। बूबू इस किशोरी नृत्यांगना के असामान्य रुप-लावण्य की नैनीताल में चर्चा थी। नैनादेवी की प्रशस्ति के बीच उसके भी रुप यौवन की प्रशंसा करते थे। बुआ के साजिंदे के इशारे पर उसे नाचना पडता था।

एक बार लेखिका की चौडे लाल पाड की खद्दर तिलका को भायी। लेखिका ने दे दी। तिलका ने जब वह साडी पहनी तब बुआ ने टोक अंग्रेज लाट-कमिश्नरों के यहाँ हमारा उठना बैठना है और तू यह घरफुक्का खद्दर पहन आई है। बोल हरामजादी, कौन है तुझे खद्दर पहनानेवाला तेरा नया यार ? '

तिलका ने लेखिका को बदनामी से बचाने के लिए नाम बताने से इन्कार किया तब उस को मार पडी। ' उसके अभिशप्त ललाट पर अंकित उसकी बुआ के साजिंदे की छडी का वह अमिट चिह्न ही तो उसका कीर्ति स्तंभ था। '

(१४) आप बीती --

बुन्देल खण्ड के राजप्रासाद के अंतपुर में बीस वर्ष पूर्व हुई एक अपूर्व गोष्टी जिसमें राजकन्या ने भाग लिया था। केवल महिलाओं के लिए दर्शित नाटक में पुरुष-पात्र करनेवाली राजकन्या को हँसी दबाना मुश्किल हो जाता है,पर्दा गिरता है।

(१५) एक अनाघ्रात पुष्प --

लेखिका की एक सहेली श्रीमती लक्ष्मी कान्तम्मा रेड्डी का रेखाचित्र है। श्रीमती लक्ष्मी का पिता प्रसिध्द देशसेवी था। पिता का शान्त स्वभाव विरासत में ही मिला था। पहले से ही उनका रहन-सहन अत्यंत सरल सादा था। सर्वोच्च पदस्थ पति का (राज्यपाल) पाने पर भी वैसा ही आडंबरहीन जीवन व्यतित करती है। देशभ्रमण,साध-सन्तों का समागम उन्हें स्वभाव से ही प्रिय है। साड़ियों ,गहनों से बिल्कुल लगाव नहीं।

श्रीमती रेड्डी और लेखिका पच्चीस वर्ष पहले शान्तिनिकेतन में दो वर्षोतक एकत्र थी। वयस एवं कक्षा का अन्तर होने पर भी वे अटूट मैत्री के सूत्र में बंधी रही।

इतने वर्षो पश्चात लेखिका लखनऊ के राजभवन में उनसे मिलने जाती है, तब उसे वैसे ही सरल पाती है। लखनऊ के राजभवन में उनका इंटरव्यू लेने जाती है तब ` मेरी दृष्टि में वह एक आदर्श पत्नी,आदर्श जननी एवं मित्र है और सोचती हूँ कि जिस व्यक्ति में इन तीन अलभ्य गुणों का समन्वय हो, वह निश्चित ही एक महान व्यक्तित्व है। .... राजभवन के नन्दनवन में खिलने पर भी वह सदा एक अनाघ्रात पुष्प ही रहेगी।`

(१०) कहानी संग्रह – करिए छिमा —

कुल कहानियाँ – ६

(१) करिए छिमा (२) जिलाधीश (३) दो बहनें (४) उपहार

(५) केया (६) चीलगाडी ।

कथा-रस में डुबो कर भाव-विभोर कर देने वाली हिन्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय लेखिका शिवानी की श्रेष्ठ कहानियों में ऊँचा स्थान रखनेवाली कहानी है ' करिए छिमा ' ।

' करिए छिमा ' में हीरावती श्रीधर की प्रेयसी है। वह फटा लहंगा और मैली ओढनी में ढकी-छिपी मधुर कण्ठ से गीत की स्वर लहरियां बिखेरती है। एक याचक की तरह श्रीधर को अपना प्रभु मानती है और क्षमा माँगती है बार-बार। त्याग की मूर्ति यह ग्राम बाला पहचानती है, उस सत्य को, जो उसकी आत्मा में बसा है।

' करिए छिमा ' का सारांश लिखने से पहले इस कहानी के बारे में शिवानी का मत उद्धृत करना गैर नहीं होगा।

' मेरी आज तक प्रकाशित कहानियों में ' करिए छिमा ' मेरी सबसे प्रिय कहानी है। आरंभ से अंत तक, उसकी एक-एक पंक्ति को मैंने कुमायूं कथांचल में जडे सलमें-सितारे दु:साहस से उखाड-उखाड कर सँवारा था। मैं जानती थी कि उस आँचल की कारचोबी एकदम असली है, किन्तु इस फरेबी युग में क्या उनकी असलियत की पुष्ट दलील से मैं अपने पाठकों का विश्वास जीत पाऊँगी ?

कहानी की नायिका पतिता है, किन्तु जैसे तीर्थ स्नान में किया गया पाप पाप नहीं होता, ऐसे ही कुमायूँ की पतिता में भी एक अनोखा तेज रहता है, ऐसा मेरा विश्वास है। वह पतिता होकर भी पतिता नहीं लगती। अपने प्रेमी को बचाने में, अपनी अवैध सन्तान को जलसमाधि देनें में वह तिलमात्र भी विचलित नहीं होती। उस पतिता को सतीरूप में प्रतिष्ठित करना मेरे लिए उस कहानी का सबसे बडा सिर – दर्द बन गया था।

नायिका, नवजात शिशु की हत्या के अपराध में, कटघरे में बंदिनी बनी खडी है। विदेशी हाकिम उससे पूछता है ' बोल लडकी, इसका पिता कौन है ? '

' सरकार ', वह मुंह जोर हँस कर कहती है, ' आप हाकिम हैं, गाँव-गाँव

का दौरा करते हैं, कितने ही नाले झारनों का पानी पीते हैं, और जब आपको जुकाम हो जाता है,तो क्या आप बता सकते हैं कि किस झारने के पानी से आपको जुकाम हुआ ?" ...

... कुमायूं की किसी पतिता की ऐसी ही दी गई कैफियत बहुत पहले कहीं सुनी थी। प्रेमी को बचाने के लिए एक अपढ पतिता की ऐसी प्रत्युत्पन्नमति, ऐसी हाजिर जवाबी और देवदुर्लभ सौन्दर्य के साथ-साथ ऐसा निष्कपट आत्मनिवेदन क्या कहीं और मिल सकता था ?

किंतु ऐसी कैफियत मैं उससे कैसे दिलवा दूं ? मैं सोचती हूं, यह उलझान केवल मेरी उलझान नहीं थी। आज से तीस वर्ष पूर्व वर्जिनिया वुलफ ने अपनी इसी उलझान के विषय में लिखा है —" मैं कितना कुछ चाहती हूं, किंतु क्या नारी होकर यह सब लिखना मुझो शोभा देगा ? लोग क्या कहेंगे ?" यही आशंका कि लोग क्या कहेंगे, एक लेखिका की कल्पना का गला घोंट कर रख देती है। कलाकार अपने कल्पना लोक मे किसी प्रकार का व्याघात नहीं चाहता ? .... अपनी आशंका को दूर पटक कर मैं स्वयं अपनी नायिका के साथ कट घरे में खडी हो गई, "श्रीमान,यह पतिता होकर भी पतिता नहीं है" मैंने उसकी मूक पैरवी की। और मुझो लगा वह छूट जायगी। कहानी के छपने के कुछ ही दिनों बाद मुझो जैनेन्द्र जी का पत्र मिला, "आपकी कहानी "करिए छिमा" पढी, मन भर आया। इसीसे जरुरी हो गया कि आपको पत्र लिखूं।" उसी क्षण विजयी नायिका का सुख स्वयं मेरा सुख बन गया।

कहानी की नायिका हीरावती को श्रीधर द्वारा अवैध मातृत्व प्राप्त होता है। नवजात शिशु के पैदा ही हीरावती दुविधा में पड जाती है - "तुम्हारी ही कंजी आंखें थीं। वही नाक। वैसे ही टेढे होंठ कर मुसकराया भी था दुसमनिया। सोचा कि मैं तो बदनाम हूं ही,तुम्हें कीचड में क्यों घसीटूं ? सारा गांव तुम्हें पूजता था। बडा होता,सब पहचान लेते कि किसका बेटा है।"

उस शिशु को अलकनन्दा में डुबो देती है। "अपराधिनी" संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में "अलख माई" में रजुला का जो चित्रण है,उस उसी के आधार पर हीरावती को चित्रित किया है। "रजुला" देवदासी (नैरण,नारायण की प्रभु दासी) है,उसको गांव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से अवैध सन्तान प्राप्त होती है,पिता जैसा हू-ब-हू चेहरा होने से वह शिशु की हत्या कर देती है ताकि बडा होने पर वह पिता के प्रतिष्ठा का बाधक न बने।

(२) <u>जिलाधीश</u> —

"सुमन श्रीवास्तव" निम्न मध्यवर्गीय असाधारण प्रतिभा संपन्न, प्रौढ कुमारिका है, जो जिलाधीश के पद पर आसिम हुई है। उसके जिलाधीश बनने के पश्चात ही उसके लिए समृध्द गृहों से रिश्ते आ रहे हैं। किन्तु अब सुमन अपने पूर्व की ग्लानी का प्रतिशोध लेने के लिए उन्हे ठुकरा रही है। विरोधी दल का नेता रणधीर सिंह भी सुमन की ओर आकृष्ट है। किन्तु सुमन उससे लापरवाह रहती है। एक बार सुमन जंगल में अकेली मिलने पर रणधीर सिंह सुमन पर बलात्कार करता है। वह कहता है — "तुम्हारी उदासीनता ने ही मुझे ढीठ बना दिया था .... कई बार तुम्हारी छुपी-छिपी मुग्ध दृष्टि का मूक आव्हान मैं पा चुका था। सच कहा सुमन।" सुमन भी जान जाती है कि वह भी उससे प्रेम करती है। दोनो विवाह के बंधन में बंध जाते हैं। नारी और पुरुष का परस्पर आकर्षण नैसर्गिक है और एक दूसरे के बिना वे अपूर्ण है।

(३) <u>दो बहने</u> —

यह भी कुमारिका के असफल प्रेम की कहानी है। छब्बीस वर्ष की विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्राध्यापिका बडी बहन जया, छोटी बहन विजया के लिए अविवाहित रहने का प्रण कर चुकी है। छोटी विजया को देखने के लिए आया आई.ए.एस.केशव जया को देखकर उसके लिए पागल हो जाता है, वह कहता है, "जानती हो आजतक मैंने उनतालीस कन्याएँ नापसंद की हैं, पर इस ध्यानग्ना तपस्विनी को मैंने चट से हृदय में मूंद लिया था।" जया से विवाह का वादा करके केशव गाँव वापस जाता है। फिर जया और विजया को पता चलता है कि केशव की सगाई एक लखपति पिता की इकलौती साँवली पहाडी लडकी से हुई। इस वार्ता से दोनो बहने सन्न रह जाती है।

केशव के आगमन से दोनो बहनों के शान्त जीवन में अशान्ति की भँवरे पैदा हो गयी।

(४) <u>उपहार</u> —

यह पारिवारिक समस्यापर आधारित पति-पत्नी में अनबन की कथा है।

लेखिका की डॉक्टर सहेली ` नलिनी कोठारी ` की यह कहानी है। मातृ-पितृ हीन नलिनी बुआ की मर्जी के बावजूद पीएच.डी.कर रहे रघुनाथ से प्रेम विवाह करती है। विवाह के बाद रघुनाथ पढाई छोड निर्वीर्य - सा आलसी बन जाता है। एक घटना में अपनी पत्नी पर शक करता है। नलिनी माँ बनने वाली होती है। तब वह सोचता है ` यह नलिनी का सामान चुराने आये डाकू की संतान है। नलिनी शक्की रघुनाथ को घर से बाहर निकाल देती है। अपनी अमीर बुआ के यहाँ आफ्रिका जाकर प्रैक्टिस करने लगती है। नलिनी का बेटा ` प्रिंस ` हूबहू रघुनाथ की प्रतिकृति है लेखिका एक बार रास्ते में पागल बने रघुनाथ को देख लेती है। वह सोचती है - पिता का स्नेह यही दुनिया का अमूल्य उपहार है। ` इस उपहार के बिना तो तुम्हारा लखपती प्रिंस सदा पथ का भिखारी बना रहेगा। `

किंतु ऐसा उपहार प्रिंस को देने के लिए वह जुटा नहीं पायी। (रघुनाथ उसे कहीं नहीं मिलता)

(५) <u>केया</u> --

यह असफल गृहस्थ नायिका के असफल प्रेम की कथा है। कथा नायिका डॉक्टर नलिनी टण्डन विवाहिता है। फिर भी २० साल में पति को सन्तान नही दे पाई। नलिनी का विवाह-पूर्व का प्रेमि मृगांक देव बर्मन था। वह नलिनी को ` केया ` (केवडा को बंगला में ` केया ` कहते हैं।) कहा करता था। नलिनी के पिता ने समृध्द कुल के मित्र-पुत्र के हाथ में अपनी अबाध्य सुन्दरी पुत्री का हाथ थमा दिया। पितृतुल्य श्वशुर ने नलिनी की डॉक्टरी पढने की इच्छा पूरी कर दी। बौना कद, भैंगी आँख और श्याम वर्ण का उस के क्रोधी, विलासी पति से वह उदासीन हो गयी है। दोनों में मानसिक, शारीरिक कोई संबंध नहीं है। दांपत्य जीवन घुटन-भरा हुआ है। ऐसी परिस्थिति में मरणासन्न प्रेमी उससे अन्तिम बार मिलने के लिये निमंत्रित करता है। उस गाँव जाने पर नलिनी को मालूम होता है कि मृगांक ने अपनी प्रेमिका के लिये अविवाहित रह कर पैथेडिन ले-लेकर अपनी दुर्दशा कर ली है। मृगांक की माँ काशी में है। वह उसे मिलना चाहता है। मृगांक के अनुरोधपर नलिनी उसे काशी ले जा रही होती है। ट्रेन

में ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

(११) कहानी संग्रह - अपराधिनी --

कुल कहानियाँ - ५

१) जा रे एकाकी, २) छि: ममी, तुम गन्दी हो, ३) साधो ई मुर्दन के गाँव ४) अलख माई ५) चाँद।

१) जा रे एकाकी --

हीरा और चनुली नामक दो अपराधिनियों का संस्मरण है। पतिव्रता चनुली के हाथों अन्जाने में हत्या हो जाती है। इस अपराध के कारण वह सजा काट रही है।

२) छि: ममी, तुम गंदी हो --

यह एक अनमेल विवाह की समस्या पर आधारित कहानी है। पति - पत्नी के वयस में अन्तर होने के कारण पत्नी जानकी एक सोलह वर्षीय युवक की ओर आकर्षित होती है। शंकालु पति हर रोज उससे झगडा करता रहता है। अन्त में जानकी का प्रेमी उसके पति की हत्या करके कहता है -- ' रोती क्यों हो, तुम्हारे दुखों का तो मैंने अन्त कर दिया। ' पिताजी के खूनी को ' अंकल ' कहने से जानकी की बेटी इन्कार कर देती है और कहती है -- ' छि: ममी, तुम गंदी हो।

३) साधो ई मुर्दन के गाव --

' साधो ई मुर्दन के गाँव ' कारागृह के लिए कहा गया है। स्त्रियों की आभूषण-प्रियता समस्या का कारण किस प्रकार बनती है इसकी कथा है। डकैत की प्रियतमा चोरी का आभूषण पहनी हुई होती है। उसकी अत्यधिक हवस से दोनों पति-पत्नी पकड़े जाते हैं।

इसी कहानी में मग्गी की उपकथा है। मग्गी जीजाजी के दबाव से विवाहोपरान्त पतियों को ठगाती रहती है। अन्त में मग्गी का पन्द्रहवाँ पति उसे माफ कर देता है। मग्गी और वह घर बसा लेते हैं।

(४) अलख माई --

यह कथा कुरुप लक्ष्मी की है। निर्दयी सास, पति की गालियों से चिढकर लक्ष्मी उनकी हत्या कर देती है। इस पाप का परिक्षालन करने वह 'वैष्णवी' बन जाती है।

अलख माई की यही 'वैष्णवी' बुआ' के रजुला तथा' करिए छिमा' की हीरावती का उद्गम है। अलख माई की मर्दानी वैष्णवी का रुप शिवानी के मन में इतना स्पष्टत: अंकित हुआ है कि वह उनकी रचनाओं में कहीं कहीं दिखाई देता है।

(५) चाँद --

'चाँद' नामक वेश्या की उच्छृंखलता के कारण मानवी उर्फ 'मानो' और उसका पति जे.के. का विवाह विच्छेद होता है। चाँद जे.के.को अपनी ओर आकर्षित कर उससे अवैध संबंध प्रस्थापित करने में सफल होती है।

१२) कहानी संग्रह - पूतोंवाली

कुल कहानियाँ - ४

१) पूतोंवाली - अप्राप्य

२) श्राप, ३) लिखूँ, ४) मेरा भाई।

(१) श्राप --

दहेज की समस्या की भयावहता का चित्रण करने वाली कहानी है। दहेज के लालची ससुरालवाले फूल सी दिव्या को जिन्दा जला देते हैं, तब दिव्या की माँ उन्हें श्राप देती है - 'जैसे उस कसाई ने मेरी बेटी को जलाया है वैसे ही वह भी तिलमिलाकर जले।"

(२) लिखुं --

लेखिका की शान्तिनिकेतन की सहेली ' प्रिया दामले ' का लिंग परिवर्तन होकर वह पुरुष बनती है। इस परिवर्तन के कारण वह पति और बच्ची को विदेश में ही छोड़कर भारत वापस आती है और ' प्रिय दामले ' बन जाती है। ' प्रिय दामले ' की मृत्यु के बाद इस बात का पता लेखिका को होता है।

(३)

मेरा भाई --

लेखिका का एक राखी बन्द भाई बड़ा होने पर चोर बनता है। एक बार वह ट्रेन में अपनी बहन की सूट केस चुराता है। फिर पता चलने पर सूट केस के साथ बहुत से रुपए छोड़ चला जाता है। लेखिका उस धन को तिरुपति के दान-पात्र में डाल कर भाई के लिए प्रार्थना करने की सोचती है।

(१३) मेरी प्रिय कहानियाँ इस संग्रह की सारी कहानियोंका परिचय हमे प्राप्त हो चुका है।

(१४) कहानी संग्रह स्वयं-सिध्दा --

कुल कहानियाँ - ६

१) अपराजिता (२) निर्वाण (३) सौत (४) तीन कन्या, (५) चन्नी, (६) तोमारे जे दोक्खिन मुख।

उपर्युक्त कहानियों में से ' तीन कन्या ', ' चन्नी ' और ' तोमार जे दोक्खिन मुख ' इन तीन कहानियों का परिचय ' किशनुली ' इस संग्रह के अंतर्गत कराया है। अत: यहाँ शेष तीन - ' अपराजिता, ' निर्वाण ' और ' सौत ' इन कहानियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

(१) अपराजिता —

यह एक नायिकाप्रधान कहानी है। इस की नायिका ' आरती सक्सेना ' अबकारी विभाग की कलेक्टर है। अपनी साहसी वृत्ति से उसने नारी अबला है, इस कथन को गलत साबित कर दिया। नाम के ग्रैज्युएट देहाती पति को एक ढोंगी गुरु के जाल से छुडाकर लाती है। अत:लेखिका ने उसे अपराजिता कहा है।

(२) निर्वाण —

एक असफल प्रेम विवाह की कहानी है। ' मनोरमा चोपडा ' जो आकाशवाणी की निवेदिका और दूरदर्शन की लोकप्रिय तारिका थी, एक ढोंगी महाराज के चक्कर में फँस कर गृहस्थी का त्याग कर देती है।

(३) सौत —

कहानी की ' नीरा ' नामक नायिका भोली भाली होने से उसकी प्रतिवेशिनी ' राज्यम् ' नीरा के पति को लेकर मद्रास भाग जाती है।

' चाँचरी '

धर्मयुग के अक्तूबर १९९० के अंक से प्राप्त कहानी का संक्षिप्त परिचय दे रही हूँ। केशव पण्डित की बिन्दी नामक इकलौती मातृहीना,सामान्य शिक्षिता, अहंकारी,जिद्दी लड़की है। बिंदी के रहस्यमय व्यक्तित्व में ऐसा कुछ है, जो उसे सामान्य से भिन्न बनाता है। लोग उसे ' चाँचरी ' (परी) कहते थे। बिंदी के अपूर्व सौन्दर्य पर मोहित होकर श्रीनाथ उससे विवाह करता है। इससे श्रीनाथ की माँ,पिता तथा बहन नाराज हो जाते हैं। एक दिन श्रीनाथ की बहन बिन्दी पर चोरी का झूठा आरोप लगाती है। माँ और बहन के बहकावे में आकर श्रीनाथ बिन्दी को घर से निकाल देता है। बिन्दी अपने पिता के घर जाती है। पिता की मृत्यु के बाद गहन साधना कर सिध्दि माँ बन जाती है।

इधर जिस श्रीनाथ ने झूठे साक्षी की गवाही सुन बिन्दी को तीस वर्ष का बनवास दे दिया था, वह पश्चाताप की अदृश्य लपटों में झुलसता रहता है। दस साल से मौनव्रत धारी बिन्दी से मिलकर माफी माँगता है। तब बिन्दी स्लेट

पर लिख देती है --

" मैंने आज तक जीवन में पराई वस्तु का कभी स्पर्श भी नहीं किया है ,मैं निर्दोष थी,अब मैं जहाँ हूँ, वहाँ से लौटना असंभव है। अब न मेरा कोई अतीत है, न कि वर्तमान, न भविष्य, तुम चले जाओ और फिर कभी यहाँ न आना। "

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी की समस्याओं तथा नारी के विभिन्न रुपों को सुचारु ढंग से समझ लेने के लिए पहले शिवानी के कहानी-साहित्य को समझ लेना या उसकी जानकारी होना आवश्यक है। अत: इस तृतीय अध्याय में उनकी मुझे प्राप्त प्रत्येक कहानी का अत्यंत संक्षिप्त परिचय देने का मैंने यत्न किया है।

शिवानी की कुछेक कहानी-संग्रहों की कहानियों को परिचय में 'लघु उपन्यास' (Fiction, Novel, Novelette अंग्रेजी में) कहा गया है। उदा. कैंजा, विषकन्या, रतिविलाप, माणिक, रथ्या, गैंडा, किशनुली आदि। कभी कभी शिवानी के उपन्यासों की सूचि में इन लघु उपन्यासों के नाम पाये जाते हैं। मेरे मतानुसार ये कहानियाँ दीर्घ कहानियाँ ही हैं। 'रतिविलाप' कहानी संग्रह में 'रतिविलाप' कहानी जो ३० पृष्ठों की है, उसे 'लघु उपन्यास' कहा है और उसी संग्रहकी अंतिम कथा 'अभिनय' ( ) भी ३० पृष्ठों की है किन्तु उसे कहानी कहा है। 'माणिक' कथा संग्रह की सबसे पहली कहानी 'माणिक' (३८ पृष्ठों की है) को लघु उपन्यास' कहा है, किन्तु उसी संग्रह की 'तर्पण' कहानी जो ३५ पृष्ठों की है उसे कहानी शीर्षक के अंतर्गत रखा है।

इस अध्ययन के पश्चात शिवानी के लघु उपन्यासों को भी लंबी कहानियाँ मान कर मैंने उन्हें अनुसन्धान के लिए ले लिया है। 'कैंजा', 'विषकन्या', 'रतिविलाप' 'माणिक', रथ्या', 'गैंडा', 'किशनुली', 'कृष्णवेणी' 'चिर स्वयंवरा', 'करिए छिमा', 'अपराधिनी', पुतोंवाली, स्वयंसिद्धा (मेरी प्रिय कहानियाँ – कहानी संग्रह की कहानियाँ पहले ही आ चुकी हैं) इन १३ कहानी संग्रहों से प्राप्त ८४

तथा धर्मयुग के अक्तूबर १९९० में प्राप्त ` चांचरी ` कथा को मिला कर ८५ कहानियों का परिचय प्राप्त कर लेने पर मैं निम्नलिखित निष्कर्षों तक पहुँच गयी हूँ।

१) शिवानी की अधिकांश कहानियाँ नायिका प्रधान हैं। जिलाधीश, मास्टरनी, केया, शिबी, बिन्नू, लाटी, चन्नी, मीलनी ` आदि कहानियों के शीर्षक कहानी की नायिका प्रधानता की ओर संकेत करते हैं। इनके अलावा कुछ कहानियों के शीर्षक भी नायिकाओं को लेकर ही दिये गये हैं, जैसे -` पिटी हुई गोट ` (चन्दो ), ` जेष्ठा (पिरी) ` चिरस्वयंवरा ` (रजनी दी) ` दो बहनें ( जया - विजया ), ` कीर्तिस्तंभ ` ( तिलका ), ` एक अनाघ्रात पुष्प ` (श्रीमती लक्ष्मी कान्तमा रेड्डी ), ` गहरी नींद ` ( उमा यादव ) ` करिए छिमा ` (हीरावती) आदि।

२) इन नायिका प्रधान कहानियों की तुलना में नायकप्रधान कहानियों की संख्या नगण्य है, जैसे - दाना मियाँ, तुई जे पुरुष मानुष रे, कालू, चार दिन की, मेरा भाई, भूल, मसीहा आदि। इनमें अधिकांश सत्य कथात्मक संस्मरण हैं।

३) अधिकांश कहानियाँ उद्देश्यपूर्ण हैं किन्तु कुछ केवल मनोरंजनार्थ लिखी जान पड़ती हैं। लेखिका की अधिकतम कहानियाँ, नायिकाप्रधान होने से यह अंदेशा हो जाता है।

४) रेल यात्रा या बस यात्रा के दौरान मिलने वाले व्यक्तियों और उनसे प्राप्त हुए अनुभवों, पर रचित कहानियाँ भी अधिक मात्रा में हैं, जो शिवानी के घुमक्कड स्वभाव की परिचायक हैं। जैसे सती, शायद, कृष्णावेणी, आमि जे बनलता, तोमार जे दोंखिन मुख आदि।

५) प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का तृतीय अध्याय का शीर्षक कहानियों का संक्षिप्त परिचय है, इस अध्याय ने सबसे अधिक पृष्ठों को व्याप लिया है। इससे और कोई बात सिध्द हो या न हो परन्तु इतना अवश्य सिध्द होता है कि शिवानी जी पहले कहानी - लेखिका हैं और फिर बाद

में उपन्यास लेखिका ।

इस प्रकार ८५ कहानियों की कथावस्तु को सार-रूप में प्रस्तुत करने से व नारी के स्वरूप तथा समस्याओं को समझने में सहायता मिलेगी ऐसा मेरा विचार है।